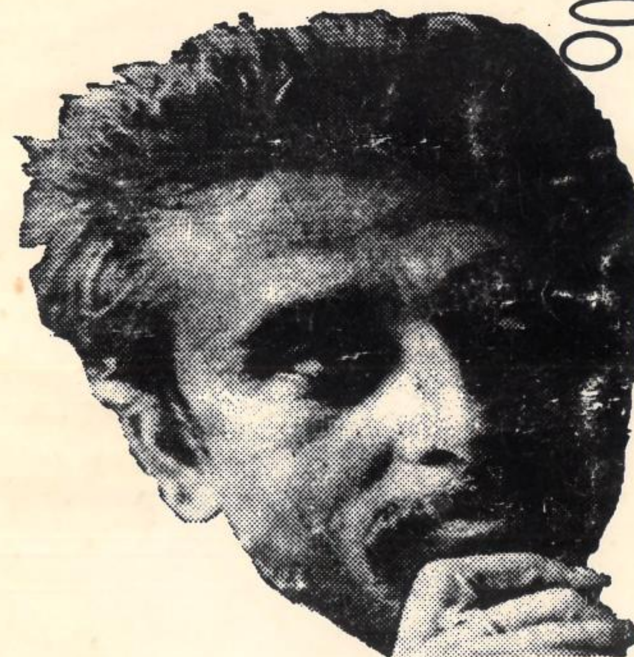
जँ हम जनितहुँ



- शरदिन्दु कुमार चौधरी

प्रकाशक एवं मुद्रक
शेखर प्रकाशन,
इन्द्रपुरी, पटना-24

पहिल संस्करण- जुलाई, 2002
मूल्य : 21 टाका

पोथी प्राप्ति स्थान
शेखर प्रकाशन
इन्द्रपुरी, पटना-24
दूरभाष : 0612-261513

हम आभारी छी

जँ हम जनितहुँ जे साहित्यिक क्षेत्रमे सेहो राजनीतिये जकाँ खेल होइत छैक तँ कथमपि एहि क्षेत्रमे पैर रखबाक दुस्साहस नहि करितहुँ मुदा आब तँ फंसि गेल छी आ दूध-माछ दुनू बांतरवला परि सन भऽ गेल अछि। ने उगिलते बनैछ आ ने घोंटिते। ओना मूलतः हम अपनाकेँ पत्रकार मानैत छी साहित्यकार नहि। तेँ जे किछु लिखैत छी ताहिपर पत्रकार प्रवृत्तिक छाप रहिते टा अछि।

बीस-पच्चीस वर्षक अवधिसँ मैथिलीक गतिविधिसँ जुड़ल छी आ एहि गतिविधिसँ जुड़ल अधिकांश महापुरुष लोकनिसँ भेंटघांट होयबाक सौभाग्य भेटल अछि। ओहि क्रममे हुनका लोकनिक (व्यक्तित्व) आकलन करब जतेक कठिन बुझायल अछि ताहिसँ सरल फूसि बाजब बुझाइत अछि। दोहरी चरित्रक निर्वाह करब जतेक सरल बुझायल ताहिसँ बेसी कठिन हास्य आ व्यंग्य केँ फरिछायब बुझायल।

हम आभारी छी ओहन व्यक्तित्वक जे हमरा रचनाशील बनयबामे मदति कयलनि, जनिक चरित्र, हमरा हास्य-व्यंग्यमे फर्क छैक से नहि बुझय देलक आ जनिक सम्भाषण हमर लेखनक कथ्य बनल। जँ हमरा ई कहल जाय जे हास्य की आ व्यंग्य की तकर अन्तर स्पष्ट करू तँ सेहो हम नहि कऽ सकब। कारण, एखन धरि मैथिलीमे जतेक लेखक ततेक भाषा, जतेक समीक्षक ततेक परिभाषा आ जतेक पाठक ततेक अभिलाषा। तेँ व्यंग्य की आ हास्य की तकरा हमरा जेहन अदना व्यक्ति की फरिछा सकत।

प्रायः एहि सभ बातकेँ ध्यानमे रखैत हमर पत्रकार प्रवृति जहिया जे देखलक से लिखलक। किछु गोटे एकरा व्यंग्य कहलनि तँ किछु गोटे हास्य। ओना ई सभ जे हो अपने लोकनिक समक्ष अछि।

एहि संग्रहमे जतेक रचना अछि से हमर अछि आ विभिन्न पत्र-पत्रिकामे विभिन्न नामसँ प्रकाशित भेल अछि। एमहर ई प्रवृति बेस पनपल अछि जे कोनो लेखकक मृत्युक बाद ओकर रचनाक लेखकक रूपमे दोसर दावेदार ठाढ़ भऽ

प्रकाशक एवं मुद्रक
शेखर प्रकाशन,
इन्द्रपुरी, पटना-24

पहिल संस्करण- **जुलाई, 2002**
मूल्य : **21 टाका**

पोथी प्राप्ति स्थान
शेखर प्रकाशन
इन्द्रपुरी, पटना-24
दूरभाष : 0612-261513

हम आभारी छी

जँ हम जनितहुँ जे साहित्यिक क्षेत्रमे सेहो राजनीतिये जकाँ खेल होइत छैक तँ कथमपि एहि क्षेत्रमे पैर रखबाक दुस्साहस नहि करितहुँ मुदा आब तँ फंसि गेल छी आ दूध-माछ दुनू बांतरवला परि सन भऽ गेल अछि। ने उगिलते बनैछ आ ने घौंटिते। ओना मूलतः हम अपनाकेँ पत्रकार मानैत छी साहित्यकार नहि। तेँ जे किछु लिखैत छी ताहिपर पत्रकार प्रवृत्तिक छाप रहिते टा अछि।

बीस-पच्चीस वर्षक अवधिसँ मैथिलीक गतिविधिसँ जुड़ल छी आ एहि गतिविधिसँ जुड़ल अधिकांश महापुरुष लोकनिसँ भेंटघांट होयबाक सौभाग्य भेटल अछि। ओहि क्रममे हुनका लोकनिक (व्यक्तित्व) आकलन करब जतेक कठिन बुझायल अछि ताहिसँ सरल फूसि बाजब बुझाइत अछि। दोहरी चरित्रक निर्वाह करब जतेक सरल बुझायल ताहिसँ बेसी कठिन हास्य आ व्यंग्य केँ फरिछायव बुझायल।

हम आभारी छी ओहन व्यक्तित्वक जे हमरा रचनाशील बनयबामे मदति कयलनि, जनिक चरित्र, हमरा हास्य-व्यंग्यमे फर्क छैक से नहि बुझय देलक आ जनिक सम्भाषण हमर लेखनक कथ्य बनल। जँ हमरा ई कहल जाय जे हास्य की आ व्यंग्य की तकर अन्तर स्पष्ट करू तँ सेहो हम नहि कऽ सकब। कारण, एखन धरि मैथिलीमे जतेक लेखक ततेक भाषा, जतेक समीक्षक ततेक परिभाषा आ जतेक पाठक ततेक अभिलाषा। तेँ व्यंग्य की आ हास्य की तकरा हमरा जेहन अदना व्यक्ति की फरिछा सकत।

प्रायः एहि सभ बातकेँ ध्यानमे रखैत हमर पत्रकार प्रवृति जहिया जे देखलक से लिखलक। किछु गोटे एकरा व्यंग्य कहलनि तँ किछु गोटे हास्य। ओना ई सभ जे हो अपने लोकनिक समक्ष अछि।

एहि संग्रहमे जतेक रचना अछि से हमर अछि आ विभिन्न पत्र-पत्रिकामे विभिन्न नामसँ प्रकाशित भेल अछि। एमहर ई प्रवृति बेस पनपल अछि जे कोनो लेखकक मृत्युक बाद ओकर रचनाक लेखकक रूपमे दोसर दावेदार ठाढ़ भऽ

जाइत अछि। तेँ हमर आग्रह जे जँ किनको ई बुझाइनि जे एहि संग्रहमे प्रकाशित कोनो रचना हुनकर होइनि तँ ओ हमरा जीविते अपन विरोध प्रकट करथु। किएक तँ हमचाहैत छी जे जीविते अपन गलती स्वीकार कऽ ली। ओना हम जनैत छी जे एहि कोटिक रचनाकेँ अपना नाम पर लेबा लेल केओ तैयार नहि होयत। किएक तँ ई सभ ने किनको सम्मान दिया पौतनि, ने इतिहासमे सम्मिलित भऽ सकतै आ ने कोनो पुरस्कारे दिया पौतै। तेँ ई सभ हमरे माथ पर करिखा लगाओत से हमरा पूर्ण विश्वास अछि।

जे-से एहि प्रकारक लेखनसँ हम किनको अपमानित-प्रताडित अथवा दुःखी नहि करय चाहैत छियनि अपितु अपन रचनाक प्रेरणास्रोत बनल व्यक्तित्व आगां नतमस्तक छियनि जे हमरा दू पांती लिखबाक अवगति भेल। हमरा आशा अछि जे समाजक एहन महापुरुष जनिका बलें ई समाज अछि, समाजक दशा-दिशा निर्धारित होइछ आ जनिकें बलें लोक नीक-बेजायक ज्ञान प्राप्त करैत अछि से अवस्से अपन अलौकिक क्रिया द्वारा हमरा भविष्योमे प्रेरित करैत रहताह किछु-किछु लिखैत रहबाक लेल।

12 जुलाई, 2002

-शरदिन्दु कुमार चौधरी
इन्द्रपुरी, पटना-24

समर्पण

एहि कोटिक रचना जिनक
प्रेरणासँ लिखबाक स्फुरण भेल,
हुनकहि कर-कमलमे सादर समर्पित

विषय-क्रम

अथ ऑपरेशन साहित्य अकादमी

'हौ भोला! तों तँ जनैत छह जे हम मारी माछ ने उपछी खत्ता। कहियो कोनो काजे नहि कयलहुँ जे लोक हमरा मोजर दिअय। मुदा तोंही कहह जे ई कोनो कीर्तिमान नहि भेलैक की? जँ मिथिलांचल छोड़ि आन कतहु अवतरित भेल रहितहुँ तँ गिनिज बुकमे हमर नाम शामिल करबा लेल क्यो ने क्यो अबस्से प्रयास करैत रहैत। मुदा जे कि अपन मैथिलीमे दुइयेटा पीठाचार्य श्रीमान् मोहन भारद्वाज आ देदीप्यमान रमानन्द झा 'रमण' छथि जे के केहन अछि तकर कुंडली बचैत छथि तेँ सभ किछु हिनके दुंनू गोटे पर निर्भर करैत अछि जे ककरा वैतरणी पार करौथिन की ककरा पताल धसौथिन। यद्यपि ई लोकनि चाहितथि तँ समाजक सभ पक्षपर ध्यान दितथि। मुदा बेसीकाल आपसेमे टाल-गुल्ली खेलाकऽ रहि जाइत छथि।'

'जे-से । एहि स्थितिकेँ देखैत आब हम सोचलहुँ अछि जे जँ तों संग दैह तँ मरबा काल किछु कऽ कऽ लोककेँ देखा दिऐक जे हमहूँ किछु छी। नहि एना तँ ओहिना सही। जे काज हमर पीठाचार्य लोकनिसँ छूटि रहल छनि तहीमे मुड़ी मारिकऽ किछु रस निकाली। की विचार? ठीक ने!'

'चलह, तों तैयार भऽ गेलह तँ उमेद भऽ गेल जे एहि बुढारीमे कोनो ने कोनो जबर्दस्त शिकार कइये लेब जाहिसँ नाम तँ होयबे करत, कतेकोकेँ नाकमे कौड़ी बान्हि कऽ अपन जुआनीक कर्जा सेहो उतारि लेबनि। तों तँ जनिते छह जे हालेमे एकटा कवि 'साठा तब पाठा' क कहबीकेँ चरितार्थ करैत एकटा पोथी लऽ कऽ मैदानमे अयलाह आ एक्के बेरमे पुरना कवि सभकेँ मूर्छित कऽ देलथिन। तहिना हम आ तों, भोला आ बमभोला, मिलि कऽ तेहन-तेहन ने गोला छोड़ब जे बड़का-बड़का पागधारीक मुँह तौला जकाँ खुजले रहि जयतनि आ हम आ तों सर्र दऽ आकाश चढ़ि जायब, जेना एखन एकटा ससुर-जमायक जोड़ी साहित्य अकादमीक अकाशमे विचरण कऽ रहल छथि।'

'अच्छा छोड़ऽ ई गप्प-सप। जखन साहित्य अकादमीक चर्च आबिये गेल तँ चलऽ सभसँ पहिने एही मैदानमे शिकार करी। सुनह, धड़फड़मे हमहूँ एकटा पोथी लिख लैत छी वा लिखा लैत छी आ तोहूँ तहिना करह। ई एहि कारणें कहि

रहल छियह जे कहाँदन साहित्य अकादमी, जे सालमे एक बेर एक-दू व्यक्तिकेँ बेस टाका-पैसा आ शीशा लागल कप सन ताम्रपत्र दै छै तकरा जीतऽ लेल एकटा पोथी अपना नामे होयब आवश्यक होइ छै। भने ओहिमे लिखल पांतीक अर्थ अनर्थे किएक ने होइ? हँ, ध्यान रखिहऽ जे पोथी देखबा-सुनबामे अवश्ये ऐश्वर्य राय नहि तँ युक्तामुखी सन सुन्दर अवश्ये होअय। हँ, एकटा बात आर हमरा सभकेँ ध्यान रखबाक अछि जे सन 2001 मे माला पहिरय लेल ओहि पोथीमे प्रकाशन वर्ष 1999 अवश्य अंकित रहय।'

'देखऽ भोला, जेना शिकार खेलाय लेल बड़ तिकड़म करय पड़ैत छै तहिना कहाँदन साहित्य अकादमीकेँ जीतऽ लेल सेहो सभ प्रकारक तिकड़म करय पड़ैत छै। तँ बूझि लैह जे एहि काजकेँ पूरा करय लेल पूरा साहित्ये आकदेमीकेँ अपना जालमे फांसय पड़तह आ पुरस्कार प्रक्रिया जखने प्रारंभ भऽ जाइ तखने हम तोहर पोथीक ढोलहो पीटय लगबऽ आ तोँ हमर पोथीक। एहिसँ लाभ ई होयत जे जेना चेतना समितिमे कतबो कटाउझ होइ छै, तैयो ओकर बागडोर एक्के (काका-भातिज) घरमे रहैत छै तहिना हमरा भेटय की तोरा, रहत तँ अपने घरमे ने।'

'एहि बेर की भेलै से सुनलह की नहि! नहि सुनलह तँ हम जे सुनलहुँ अछि सैह सुनिकऽ तोंहू एखनेसँ लागि-भिड़ि जाह। कहाँदन एहिबेर साहित्य आकदमीवला सभ पटनाक कंकड़बागमे जूमि गेलाह आ आपसमे तसफिया कऽ लेलनि जे अहाँ हमर बात मानू हम अहाँक चुमाओन करा देब। कहाँदन एही आधार पर सभ दिन तमसायवलाकेँ 'तमस' पर चुमाओन करयबाक निर्णय लेल गेल। आ तेँ 'अनवरत' एहि प्रयासमे लागल महान योद्धाक हाथसँ ओ कप उछलिकऽ गणदेवताक हाथमे जाकऽ खसि पड़लनि। तोंही कहऽ जे जतय लेखनक मोजर नहि, साहित्यक मोजर नहि, तखन साहित्य अकादमी जे एते खेल खेलाइए, साल भरिमे पहिल राउंड, दोसर राउंड, आ तेसर राउंडक मुक्का-मुक्की कराकऽ एकटा पहलमानक हाथ विजयी मुद्रामे ऊपर दिस उठा दैए, से किएक? जँ कप देबाक एहने परिपाटी चलयबाक छैक तँ एतेक कागजक खर्च, गाड़ी भाड़ा, मिटिंग-सिटिंग सभ व्यर्थ। हमर तँ विचार अछि जे दिल्ली चलिकऽ हम सब साहित्य अकादमीक अधिकारी-पदाधिकारीकेँ ई परामर्श दियनि जे ओ सभ एहि व्यर्थ खर्च सभकेँ बन्द कऽ देथि आ एहि राशिकेँ पुरस्कारे राशिमे जोड़ि देथि। अर्थात एक्के तीरमे दू शिकार। पुरस्कार राशि बढ़लासँ मैथिलीमे ढौए-ढाकी पोथी आबऽ लागत आ मिथिलाक नेता सभ मिथिलांचलकेँ चूसनाइ छोड़ि साहित्य अकादमीक तिरपेच्छनमे लागि जयताह। रहल पुरस्कार ककरा भेटय तँ से हम आ तोँ विचारि लेब जे अपने

ली कि अनका दऽकऽ तरघुसकी लऽ ली।'

'हौ भोला! साहित्य अकादमी छै नगदी फसिलवला खेत। तेँ जँ ओतऽ खेती करबऽ तँ पूरा ध्यान देबऽ पड़तह। एकटा फराक गुट बनाबऽ पड़तह। मैथिलीमे जतेक गुट छै तकर मार-सम्हार करय पड़तह। दरभंगासँ दिल्ली धरि खेहारि करय पड़तह। ककरो प्रणाम तँ ककरो निन्द हराम करय पड़तह आ सभसँ बड़का बात ई जे बात सार्वजनिक हितक आ काज अपन हितक करब सीखय पड़तह।'

'हौ! बेर-बेर तों पोथीक विषय की राखी ताहि पर किएक जोर दैत छह! जैह बुझाइ छह सैह लिखह, जेना बुझाइ छह तहिना लिखह। एहि ओझरौटमे पड़लासँ कोनो फल नहि भेटतह। फल भेटतह तँ पुरस्कार प्रक्रियाक बेरमे अपन पोथीक प्रचार-प्रसारसँ। अकादमीवला 'रेफरी'क दुलार-मलार आ गोलैशीक प्रचार-प्रसारसँ आ जँ से बात नहि रहैत तँ राजमोहनजीकेँ आइ-काल्हि परसूक माला नहि जपय पड़तनि। कीर्तिनारायणजीकेँ शान्ति स्तूप ध्वस्त नहि करय पड़तनि आ ने जीवकान्त जीक चिड़ै एतेक दिन तकैत रहितनि। तेँ हम तँ कहबह जे पोथीमे तेरह टा मसाला अबस्से दिहक जाहिसँ ओकरामेसँ चौदह टाक स्वाद बहार होइक आ तखने निर्मलीवला ट्रेनमे जेना पाचक बिका जाइ छै तहिना तोहर आ कि हमर पोथी अकादमी लेल चुना सकत। ओना ई बात तँ तोरा हमरासँ बेसिये बूझल छह जे हम मैथिली भाषी सभ नव-नव स्वाद चिखबामे कतबा माहिर छी। जँ ई नहि होइत तँ सभ दिन आर ब्लाकमे धरनिया देबऽवला एहिबेर कंकड़बाग दिस किएक चल जइतथि?'

'तोंहू बेस बुझनुक छह! बेसी की बुझबियह। देखा दहक एहि बेर पूरा परोपट्टामे जे भोला-बमभोला गोलैशीक बलें आब सभ किछु कऽ देखौताह चाहे ओ साहित्य अकादमी किएक ने होउक। बेस, तँ फेर भेंट हेतै अपन-अपन पोथीक संग, साहित्य अकादमीक जंगमे।'



अपील

कैक ठामसँ आग्रह कयल गेल अछि जे व्यंग्य रचना शीघ्रातिशीघ्र पठाबी। आग्रह ततबा जोर अछि जे जे लीखि कऽ पठा देबैक से छपि जायत। रचना संख्यामे एकटा आर वृद्धि भऽ जायत। किछु पाठक तारीफ करताह तँ किछु गोटे खेहारबाक लेल तैयार भऽ जयताह। जेना-तेना किछु हमर रचनाक आ किछु हमरो चर्च भइये जायत। मुदा हमरा सामने ई समस्या उत्पन्न भऽ गेल अछि जे कोन विषय पर अपन कलम चलाबी। कारण मैथिलीक पाठक लेल चहटगर, ईर्ष्या-द्वेष, उतराचौरीवला व्यंग्य चाही। आ हमहूँ बुझैत छी जे एहि तरहक व्यंग्यक माँग एमहर बेस भऽ गेलैक अछि, किएक तँ एहिमे बेसीसँ बेसी लोकक नाम रहैत छैक, कारनामा रहैत छैक आ संग-संग एहिमे रहैत छैक सत्य घटनाक समावेश। अपनो इच्छा छल जे फेर किछु तेहन काज करी जे चर्चामे आबि जाइ मुदा तैयो गबदी मारि कऽ बैसल रही।

मन पड़ैए जे भाइ साहेब (राजमोहन झाजी) केँ एक दिन कहने रहियनि जे फेर किछु एहन घटना भऽ रहल छैक जे किछु लिखबा लेल हाथ फरकि रहल अछि। हमरा ई कहबाक छल कि ओ धऽ लेलनि आ आब हमरा ततेक ने तगादा कऽ रहल छथि जे हम परेशान छी। तहिया ज्वारि उठल छल, आब सटकि गेल अछि। मुदा ओ तँ मोगल जेना तगादा करिते छथि जे आब मित्र अरुण आचार्य जनिका ओहिठाम आरंभ छपैत छनि सेहो तेहन तगादा कऽ रहल छथि जेना हम हुनकर किछु बिगाड़ि रहल होइयनि। विकट समस्या एहि व्यंग्यक कारणेँ भऽ गेल अछि।

एमहर महगी बढ़ि गेलैक अछि, बेरोजगारी दिनानुदिन बढ़ि रहल छैक, कामचोरी आ भ्रष्टाचार बढ़ि गेल छैक, लोक आ संस्था अपन-अपन काज नहि कऽ 'एक्स्ट्रा नॉलेज' देखयबाक फैशन जकाँ किदन-कहाँदन करैत रहैत अछि। जेना जनगणना आ मैथिली आन्दोलन चलाओल जयबाक समयमे चेतना समिति महगीसँ प्रभावित भऽ आजीवन सदस्यक सदस्यता शुल्क बढ़यबाक, बेरोजगारी दूर करबा लेल उपाध्यक्ष आ संयुक्त सचिवक संख्या बढ़यबाक तथा कामचोरीक कारणें साधारण सदस्य बनयबाक प्रथाकेँ समाप्त करबा लेल अपन संविधानमे संशोधन करबाक नेयार कऽ रहल अछि तहिना हमरो इच्छा भऽ रहल अछि जे चेतना समिति पर झिझिर कोनाक बाद 'माधव हम परिणाम निराशा' शीर्षकसँ

एकटा व्यंग्य लिखि कऽ विद्यापतिसँ पुछियनि जे अहाँ मैथिल किएक भेलहुँ, बंगाली किएक नहि? मुदा चेतना समितिक हिट लिस्टमे आबि जयबाक डरें हिम्मति नहि होइत अछि।

फेर मोन होइए जे सम्पादक बनबाक जे कीर्तिमान, स्थापित भऽ रहल छैक ताहिपर कलमकेँ दौड़ा दिऐक। कारण ई जे सभ पत्रिका, स्मारिका, पाठ्य-पुस्तक अथवा अखबारमे सम्पादकक स्थान पर विद्यापति, महादेव आ कि महामहोपाध्याय लोकनि विराजमान भऽ जाइत छथि आ काज करय पड़ैत छैक उगना, ढीनमा आ चिनमाकेँ। तेँ एहि विषय पर व्यंग्य लिखबा लेल चेतना समितिक स्मारिका, मैथिली अकादमीक पत्रिका, किछु पाठ्य-पुस्तक आ कैक टा अखबार आदिकेँ व्यंग्यक मैटर एकत्र करबाक हेतु आगाँमे पसारैत छी। किछु लिखबा लेल बात सभ फुराय लगैत अछि मुदा फेर मन कोनादन होमय लगैत अछि। मोनमे डर पैसि जाइए श्री मोहन भारद्वाजजी आ डा. बासुकी नाथ झा जीक। जँ कहियो मैथिली अकादमीक कोनो पोथीक सम्पादक बनबाक अवसर भेटबाक बात होयत तँ काज बिगड़ि जायत। फेर 'रमण' जीक मुस्कुराइत चेहराक स्मरण होइत मातर देह सिहरि जाइत अछि जे चेतना समितिक पुस्तकालयाध्यक्ष छथि। जँ ओ बिगड़ि जयताह तँ कोनो पोथीक कहियो दर्शनो नहि करय देताह पोथी लऽ जयबापर तँ पहिनहिसँ प्रतिबंध लगौने छथि। ई तीनू सम्पादकजीसँ अराड़ि लेब उचित नहि बुझायल। रहल बात अखबार आर्यावर्तक तँ ओकर चर्च करब तँ जेहो नोन-रोटीक जोगाड़ अछि ताहूसँ हाथ धोबय पड़त। तेँ ईहो विषय सूट नहि करैत अछि व्यंग्य लेखनक।

जेँ कि भाइ साहेब लेल एकटा व्यंग्य लिखबाक अछि तेँ फेर मनकेँ मनबैत छी आ सोचैत छी जे मैथिली प्राध्यापक लोकनिक जे मैथिलीक प्रति भूमिका रहलनि अछि ताहिपर एकटा व्यंग्य लिखि कऽ दऽ दियनि। ई हुनका बेस नीको लगतनि कारण हुनका लोकनिक छिच्छापर भाइ साहेब कहियो प्रसन्न नहि रहलाह अछि। आ भाइ साहेब की हमहूँ विद्यार्थी जीवनमे हिनका सभक किरदानी सँ अकच्छे रहलहुँ। जहिया मैथिली पढ़बा लेल पटना विश्वविद्यालयमे नाम लिखौलहुँ तहिये श्रीमान् पाठकजी सन क्रोधी, श्रीमान् दिनेशजीसन भोगी आ श्रीमान् इन्द्रकान्त जी सन लोभी गुरुजीसँ भेंट भेल छल। परिणाम ई भेल जे मैथिलीक पढ़ौनीसँ मन उचटि गेल आ मैथिलीसँ प्रेम भऽ गेल। प्रायः एही कारणे मैथिली पढ़निहार छात्रक संख्या घटैत गेल आ प्राध्यापक लोकनिक हेठी बढैत गेल। आइ मैथिलीक प्राध्यापक लोकनि जतय कतहु कथा-गोष्ठी होयत अथवा

मैथिलीक मादे प्रशासकीय निर्णय लेल जतय ओतऽ दरिमा आ कि किसुनभोग आम जकाँ गाल फुलौने बैसल रहताह मुदा जहाँ हुनका सँ ई पुछबनि जे अहाँ ओतऽ कतेक विद्यार्थी अछि तँ लाजवन्ती जकाँ मुँह नुका लेताह। तखन बुमकार छोड़ैत बोली, विद्वताक ढ़ेकार करैत कठहंसी आ एकोहं द्वितीय नास्तिक पैंतरा सटकि जाइत छनि। मुदा अपन बेसाहल आ बहुक मारल लोक मोनेमोन जेना कुहाइत अछि तहिना आब ई लोकनि परिस्थितिवश कूहा रहल छथि।

यैह विषय ठीक होयत एहि बेर व्यंग्य लेखन लेल- ई सोचिकऽ कलम-कागज उठबैत छी कि फोनक घंटी बजैत अछि। चोंगा उठबैत छी। ओमहरसँ आवाज अबैत अछि-'एहि बेर एकटा किताब तैयार करबाक हेतु साहित्य अकादेमीमे अहाँक नाम पठौने छिऐक। जँ अहाँ प्राध्यापक वर्ग पर जे हरदम किदन-कहाँदन लिखैत रहैत छिऐक से बन्न करबाक वचन दी तँ अगिला मीटिंगमे प्रस्ताव पास करबा दी। ओना अहाँकेँ जे उचित बुझाय।' जावत हम किछु बाजी फोनक लाइन कटि जाइत अछि। बड़ी काल धरि द्वन्द्वमे फंसल रहि जाइत छी जे की करी, की नहि। फेर विचारैत छी जे बेकार एकटा व्यंग्यक मोल पर एहन नीक अवसर गमाबी।

कागत-कलम ओहिना टेबुल पर राखि दैत छी आ विदा भऽ जाइत छी अरुणजीक प्रेस जतऽ भाइ साहेब सेहो आबऽवला छथि। मोनमे ई दृढ़ निश्चय कऽ लैत छी जे ओ दुनू गोटे कतबो कहताह व्यंग्य लिखबा लेल हम नहि मानबनि अपितु हुनका लोकनिसँ आग्रह करबनि जे हमरा मन्वयबासँ बेसी आ हमरा लेल , हमर व्यंग्य लेल पत्रिकामे जे स्थान छोड़ने छथि ताहिठाम मैथिली-भाषीक नाम एक अपील छापि देथि जाहिमे हुनका सँ आग्रह करथि जे ओ लोकनि जनगणनामे अपन मातृभाषा मैथिली लिखाबथि। हमरा जनैत मैथिली भाषीकेँ ई अपील हमर व्यंग्यसँ बेसी नीक लगतनि। भऽ सकैत अछि ओ लोकनि ओहि अपीलकेँ व्यंग्य नहि बूझि हास्ये बूझि लेथि आ हँसैत-हँसैत हुनकालोकनिक पेट दुखयबाक संगहि-संग आँखिसँ नोरो खसि पड़नि।



ईहो पुरुष अलबत्ते

हुनका देखितहि पित्त आंट भऽ जाइत अछि। मोन होमऽ लगैत अछि जे खाहे तँ हुनके किछु कऽ दियनि अथवा अपने कपार फोड़ि ली। मुदा की करब, माहुरक घोंट पीबि रहि जाइत छी। ने हुनके किछु कऽ पबैत छियनि आ ने अपने कपार फोड़ल होइत अछि। कोनो एकटा वैह टा होथि तखन ने किछु कऽधऽ कऽ निचेन भऽ जाइ। एहन-एहन सैकड़ो लोक हमरा-अहाँक बीच सह-सह कऽ रहल छथि जनिकर प्रतापें हम- अहाँ प्रतिदिन अपन खून जरबैत छी आ जरबैत रहब।

आब हिनके लियऽ। ई हमर पड़ोसी छथि। एही लाथें हमरा हिनक सभटा टिटम्हा सहय पड़ैत अछि। मोन मारि कऽ हिनक सभटा बात सुनय पड़ैत अछि, भोगऽ पड़ैत अछि। आखिर ईहो तँ एही पृथ्वीपरक लोक छथि। हिनको आन स्वतंत्र लोक जकाँ अपना ढंगसँ जीवाक अधिकार छनि। मुदा की करू? हिनकर बोल-चाल, बात -व्यवहार, बगय-बानि देखि-सूनि ककरो तामस भऽ सकैत छैक तँ जँ हमहू तमसा जाइत छी तँ कोन आश्चर्य!

आब अहीं लोकनि कहू जे ओ भोजन करय बैसताह अइंठारपर आ नाक-भौंह सिकोड़ैत बजताह जे एहिठाम एतेक माछी किएक भनभनाइत अछि, एतेक गन्हाइत किएक अछि तँ एतेक गन्दगीक अमार किए लागल अछि? जँ हुनक एहि बात पर कियो टोकि देतनि तँ छुट्टा सांढ़ जकाँ बोमिआय लगताह आ कोना पवित्र आचरण राखी ताहिपर नमहर सन भाषण देबऽ लगताह। मुदा फेर ओहीठाम एक चुरुक जल छीटि कुकुर जकाँ चभर-चभर करैत बिन चिबौने गिरय लगताह। तखन ओ बिसरि जयताह जे अइंठारे पर बैसल भोजन कऽ रहल छथि। एहन चरित्रक लोकक सभटा काज अनकट्ठल, अनसोहांत आ अनटोटल होयत मुदा देखाउसमे करत पवित्रताक टाटक। एहन सन जेना हुनका मोनेमे गंगा बहैत होइनि आ हुनक सभटा किरदानिये प्रेरणास्पदे होइनि, भने हुनका देखि, हुनक किरदानी देखि, लोक रुमालसँ नाककेँ किएक ने झांपि लिअय।

ई बात नहि जे एहन अलबत्त पुरुष सभसँ हमरे टा भेंट होइत अछि। अहूँ सभकेँ एहि कोटिक लोकसभसँ अवस्से ठाम-कुठामपर भेंट होइत होयत। आ ईहो सत्ये बात जे ई लोकनि अपन व्यवहारसँ एक्के बेरमे अहाँकेँ आकर्षित कइये लेत होयताह।

कतेक महानुभावक दाबी रहैत छनि जे वैह टा दूधक धोअल छथि आ शेष सभ पातकी। हुनकासँ गप्प होयत तँ ओ एक्के लाड़निये अपना छोड़ि सभ वर्गक लोकक‍ँ भ्रष्ट प्रमाणित कऽ देताह। गप्पक क्रममे हुनक वाक्पटुता, देहक संचालन आ विषयक प्रस्तुति देखि होयत जे वस्तुतः महान छथि आ हुनक आक्रोशो उचिते छनि। मुदा जँ हुनक धोअल चरित्रक पता लागि जायत तँ स्वतः थूक फेका जायत, जेना की कोनो असर्ध पदार्थ देखलापर फेका जाइत छैक। होयत जे बेकार एहन लोक लग ठाढ़ भेलहुँ। बेकारे हुनका एतेक सह दऽ रहल छियनि। एहन लोक असत्येक खेतीपर आश्रित रहैत छथि आ अन्याये हुनक मूल व्यवसाय रहैत छनि। मुदा हुनका.... हुनका अनका पर कटाक्ष करबामे एकोरत्ती लाज नहि, कोनो धाख नहि। एहन सन जेना ओ अपन अधिकारक निर्वाह कऽ रहल होथि, अपन पवित्र आचरणक निर्वाह लेल धर्मक पालन कऽ रहल होथि।

ऐन-मेन एहने एकटा व्यक्ति हमरा टोलमे अपन माथ ऊँच कयने बौआयल फिरैत छथि। काज किछु नहि मुदा खोराकी धरि जबरदस्त छनि । ओ अपनाक‍ँ बड़का समाज़ सुधारक मानैत छथि। नीक-बेजायक निःशुल्क परामर्श दैत दिन कटैत छथि। साठिक धक लागि गेल छनि मुदा तृष्णाक अंत नहि भेल छनि। हालेमे एकटा घरमे रंगल हाथ पकड़ल गेलाह मुदा तैयो लाज नहि। उनटे लोकक‍ँ कहैत फिरैत छथिन जे हमरा सन निष्कलंक लोकक‍ँ बदनाम कयल गेल। ककरो नीक नहि हेतै।

एहि कोटिक महानुभावक‍ँ अपना चरित्र पर गर्व रहैत छनि मुदा ओ गंगामे दहाइत ओहि प्रदूषित वस्तु जकाँ समाजमे विचरण करैत रहैत छथि जेना गंगा सन पवित्र नदीक महत्ताक‍ँ नाश करबामे लागल रहलो पर कोनो असर्ध वस्तु इतराइत चलैत रहैछ।

किछु महानुभावक‍ँ होइत छनि जे ओ गंगा सदृश प्रवहमान छथि आ ओ नहि रहताह तँ सृष्टिक अंते भऽ जयतैक। जेँ ओ छथि तँ कोनो कारबार चलैत छैक। मुदा हुनकर दिनचर्या देखब तँ छगुन्ता लागि जायत। 'सभ छौड़ी झुम्मरि पाड़य कनही कहय हमहूँ' ई कहबी एहने सन लोक लेल उपयुक्त होइत छैक। एहने कहबीक‍ँ चरितार्थ करैत छथि हमरा सभक बीचक एकटा नेताजी। पिताक कीर्ति गाथा या यशाक बलें लोकसभा आ विधान सभाक मुंह जेना-तेना देखिये लैत छथि। कोन पाटी छोड़लनि आ कैकटाक‍ँ पकड़लनि से प्रायः हुनको मोन नहि होयतनि, हम कतऽ सँ ओतेक मोन राखू। हँ, आइ काल्हि हुनका मैथिली, मैथिली साहित्य आ मैथिल संस्थासँ बेस प्रेम भऽ गेलनि अछि। तँ कहाँदन राजनीति-ताजनीति

छोड़ि मैथिली गतिविधियेमे बेस बाझल रहैत छथि। साहित्यकार लोकनिक‍ँ जेना ओ बकानि पियौने छथि से सौभाग्य हिनके टा भेटल होयतनि। मैथिली पढ़य नहि अबैत छनि, लिखय नहि अबैत छनि, मैथिली साहित्यसँ कोनो छुइत नहि छनि मुदा मैथिली लेखनक हेतु ककरा पुरस्कार देल जाय, ककरा नहि से धरि ई खूबे बुझैत छथि। ओना अपन भाषणमे ई उचितवक्ता जकाँ निधोख बजैत छथि जे हम साहित्य-ताहित्य नहि बुझैत छी तँ हम की कहब। मुदा जखन कोनो विषयक निर्णयात्मक बेर होइत छैक तँ जूति हिनके चलैत छनि आ साहित्यकार आ एहि प्रक्रियामे लागल भिड़ल अधिकारी-पदाधिकारी मौगमेहरा जकाँ हें-हें करैत रहि जाइत छथि।

एहन-एहन नेताजीक‍ँ होइत छनि जे जेँ हम छी तँ मैथिली टिकल अछि आ मैथिली संस्था चलि रहल अछि मुदा हुनका ई नहि सूझैत छनि जे जाहि पदपर ओ छथि ततऽसँ एकोरत्ती जँ जोर लगा देथिन तँ एकटा संस्थाक‍ँ के पूछय कैकटा मैथिल संस्थाक‍ँ उसाहि देथिन। एकटा कलाकारक‍ँ के पूछय दसो मैथिल कलाकारक‍ँ प्रोत्साहित कऽ रेडियो-दूरदर्शनमे बैसा देथिन। मैथिल जन-प्रतिनिधिक‍ँ संगोर कऽ मैथिलीक‍ँ संविधानक अष्टम अनूसूचीमे पैसयबाक जोगार धरा देथिन। मुदा जेँ कि नेताजीक‍ँ राजनीतिमे रहियो कऽ राजनीति नहि करय अयलनि तँ मैथिली संस्थाक छाहरिमे निचेनसँ पड़ल रहबाक भरिपोख समय भेटि रहल छनि।

कनफुसकीसँ प्रेरित भऽ समाज-सुधार आ भाषाक उद्धार नहि होइत छैक से हुनका के कहतनि! जँ अपना बुझय अबितनि तँ जाहि कीर्ति पुरुषक बलें आइ छथि तनिक कीर्ति पताकाक‍ँ फहरयबा लेल कोनो निस्सन काज करितथि, ने कि एहि कोठीक धान ओहि कोठी कऽ दिन खेपितथि।

आब अहीं लोकनि कहू जे एहन लोक की बुझौने बुझै छै? बुझऽवला तँ अपने लाल बुझक्कर होइत छै। मुदा ई अतबत्त पुरुष सभक‍ँ के बुझौतैक ज़े साहित्यिक काज साहित्यकार करय आ राजनीतिक काज राजनेता। मुदा समाजमे जहियेसँ टू इन वन प्रथा चलि गेलैक अछि तहिये सँ सभ चाहैत अछि जे सभ काज हमहीं कऽ ली। कोन हर्ज, करू, अवश्ये करू! भने अपन समाजक भद्द भऽ जाय, आन लोक पिहकारी पाड़य।

सत्य पूछी तँ एहि प्रकारक महानुभाव मानताह थोड़बे आ जँ कदाचिंत मानियो जयताह तँ की हुनकर चमचा-बेलना हुनका निचेनसँ बैसय देतनि। किछु ने किछु कराइये देतनि. जाहिसँ हुनक तँ भद्द होयबे करनि जे बाप-पुरुषाक इज्जति सेहो

नीलाम भऽ जाइनि।

अहाँ ई जुनि बुझू जे खाली नेतेजी टा एहन ओहन जीव छथि जिनके टारा घी जरैत छनि। ई बात नहि। हमरा अहाँक बीच कैकटा एहन सरकारी अधिकारी -पदाधिकारी छथि जिनकर व्यस्तता देखब तँ मोनमे होयत जे बेचाराकेँ बड़ कष्ट छैक, बड़ खटऽ पड़ैत छैक। मुदा जखन हुनक किरदानी सँ भेंट होयत तँ हमरे जकाँ अहूँ अपन देह अपने धूनय लागब।

आउ, एहने एकटा अधिकारीसँ परिचय करबैत छी जनिका सभक झार-पोछक प्रवृत्ति आ खंड-खंड कऽ खयबाक आदति सँ आइ झारखण्ड तँ बनि गेल मुदा बिहारकेँ तेना ने झारि पोछि देलनि जे सरकारी खजाना खाली भऽ गेल मुदा हिनका लोकनिक जनानी सभ बिहारक अधिकांश सम्पतिक मलिकाइन बनि गेलीह आ सभटा राबड़ी-मलाइ हिनके भेटय लगलनि अछि।

ई थिकाह एकटा संस्थाक उच्चाधिकारी। बेस ओहदा भेटल छनि आ तकर निर्वाह हेतु बेस ओजनगर दरमाहा सेहो भेटैत छनि। कार्यालयसँ लऽकऽ निवास धरि पर ई ककरो बाजऽ नहि दैत छथिन। मुदा काजक बेरमे हाथ थरथराय लगैत छनि। स्टेनोक सिग्नल भेटले पर फाइल पर दस्तखत करबाक अभ्यासी छथि। मातहत सभकेँ अयोग्य कहैत मुंह दुखाइत छनि आ स्वंय दू पांतीक नोट लिखबामे दू मास लागि जाइत छनि। भ्रष्टाचारक प्रसंग चलिते मुँहसँ 'सीताराम-सीताराम' बहराय लगैत छनि मुदा ओकरे आशीर्वादसँ कैकटा शहरमे मकान-दोकान छनि, मोटर कारक दलान पर अमार लागल छनि। अपनाकेँ ई भगवान आ गरीब-गुरुआकेँ कीड़ा-मकोड़ा बुझैत छथि। हिनको यैह सोच छनि- जेँ हम तेँ ई दुनिया।

सत्य पूछी तँ एहने लोकक प्रेरणाक बलेँ गंगा बहैत छथि, एहने लोकक प्रादुर्भाव भेलासँ सृष्टिक निरंतरता बनल अछि आ एहने लोकक किरदानीक इतिहास बनैत अछि- हम अहाँ तँ जन्मे लेने छी एहि अलबत्त महापुरुष लोकनिक चालि-ढ़ालिसँ कूही होइत माथ-कपार फोड़बा लेल।



देखल एकटा शूटिंग

पटना दूरदर्शनसँ एकटा हास्य-व्यंग्य कार्यक्रम प्रसारित कयल जयबाक योजनाक अन्तर्गत पटनामे शूटिंग करबाक हेतु एकटा शिविर लागल छल। एहि शिविरमे भाग लेबाक हेतु मैथिली साहित्याकाशक प्रचंड आ जुआयल विद्वान सभ उपस्थिति भेल छलाह। कार्यक्रमक निर्माता निर्देशक बटुक भाइ उपस्थित विद्वान लोकनिकेँ सम्बोधित करैत कहलथिन-

आदरणीय विद्वतजन एवं सज्जनवृंद!

अपने लोकनिकेँ बूझल अछि जे नववर्षक शुभागमन पर सभ वर्ष एकटा हास्य-व्यंग्यक कार्यक्रम दूरदर्शनसँ प्रस्तुत कयल जाइत अछि जाहिमे फगुआक पुट दैत सभ तूर आ सभ वर्गक पात्र सभ विषयकेँ खोंइचा छोड़ाकऽ बिना कोनो प्रकारक पूर्वाभ्यास कयने प्रस्तुत करैत छथि। तेँ हम एहि बेर नेयारल अछि जे अपने लोकनिक सहयोगसँ एकटा एहन कार्यक्रम बनाबी जकरा प्रसारित करबाक माँग दर्शक बरोबरि करैत रहथि। अपने लोकनिकेँ एहि लेल ने कोनो प्रकारक आलेख तैयार करय पड़त आ ने साहित्य अकादेमीक पुरस्कार लेल जेना चिरौड़ी-मिनती करय पड़ैत अछि से करय पड़त। हम जेँ कि एहि कार्यक्रमक एसगरुआ निर्माता-निर्देशक छी तेँ जे करय पड़त से हमर निर्देश वा आदेश मात्र पर। अपने लोकनिकेँ ईहो जना दी जे जँ ई कार्यक्रम सुतरि गेल तँ दूरदर्शनक सभ चैनेलपर फगुआ दिन प्रसारित कयल जायत। एहिसँ अपने लोकनिक ख्याति तँ राष्ट्रीय स्तर पर होयबे करत, एहिमे भाग लेनिहार भाग्यवान कलाकार-साहित्यकारकेँ रॉयल्टीक रूपमे एकटा मोट सन राशि सेहो देल जयतनि।'

बटुक भाइक आयोजन-भाषण समाप्तो नहि भेल छलनि कि उपस्थित साहित्यकार लोकनि अपना-अपना स्थान पर ठाढ़ भऽ बाजय लगलाह "शुभ काजमे विलम्ब की। ई कार्यक्रम एखने बना लेल जाय।" जतेक मुँह ततेक बात। मुदा एक बात समान छल जे पहिने हमरा शामिल कयल जाय तँ पहिने हमरा। आपसेमे कटाउझ होमऽ लागल जे कैमराक पहिल फोकस हमरे पर पड़य। उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' सँ लऽकऽ मधुकान्त झा धरि आगाँ अयबा लेल छड़पान दैत।

बटुक भाइ अपन काज सरल होइत देखि मुस्की छोड़ैत छथि आ सभकेँ शान्त करैत पुनः बजैत छथि- 'सज्जनवृन्द! शूटिंग आरम्भ होयबासँ पूर्व अपने

लोकनि विषय बूझि लितहुँ तँ नीक होइत। ओना हमरा बूझल अछि जे अपने लोकनि स्वामी विवेकानन्दसँ कनिको कम नहि छी जे शून्यो विषयपर ओकर महत्ता सिद्ध कइए कऽ रहब। मुदा जँ ई कार्यक्रम शुद्ध कऽ अपनापर अर्थात अपने लोकनिक व्यक्तित्वक सभसँ सबल पक्ष तिकड़मबाजी पर आधारित अछि तँ अपने लोकनिसँ आग्रह अछि जे अपने सभसँ पैघ तिकड़मबाज छी से सिद्ध करबा लेल अभिनयक संग सोदाहरण प्रमाण दी।"

बटुक भाइक प्रस्ताव पर आपत्ति करबाक उद्देश्यसँ मोहन भारद्वाज आन लोक सभकेँ ठेलैत-ठालैत मंचपर अबैत छथि आ हाथ ऊपर दिस उठाकऽ बजैत छथि (बटुक भाइ बिना लोकककेँ सावधान कयनहि शूटिंग प्रारम्भ करबाक उद्देश्यसँ कैमरामैनकेँ चालू भऽ जयबाक संकेत दऽ दैत छथिन)- मैथिली साहित्यक सभ पीढ़ीक लोककेँ ई बूझल छैक जे हमरासँ पैघ तिकड़मबाज क्यो नहि अछि, तखन एहि विषयक फिल्म बनयबाक नेयारे बेकार अछि। तँ कोनो दोसर प्रकारक विषयपर शूटिंग होअय।"

दर्शक दीर्घाक बीचमे सँ मूड़ी निकालि कऽ चिचिआइत मैथिलीक विषपिपरी समीक्षक रमानन्द झा "रमण" बजैत छथि-"यौ भारद्वाजजी, भऽ गेल ने बाजल। सभठाम अहींक तिकड़म नहि चलत। ई कोनो साहित्य अकादमी छै जे भीम भाइ आ रामदेवजीकेँ लड़ाकऽ अपन लोक आ अपने ओकर परामर्शदातृ सामितिमे घुसि गेलहुँ। कहाँ गेल अहाँक बुधियारी जे लाख तिकड़म आ सांसदक पैरवीक बादो मैथिली आकादमीक तुच्छ सन कार्यकारिणीक सदस्य नहि बनल भेल। चुपचाप बैसि जाउ, आब अहाँक युग समाप्त भेल। हमर युग आयल अछि।"

"हे यौ रमण जी, अहाँ अपनाकेँ की बुझैत छी? कतबो अहाँ अपनाकेँ सम्पादकाचार्य बुझू मुदा तिकड़मबाजीमे एखनो धरि अहाँ नेने छी, बुझलहुँ की नहि। गोविन्द बाबूक अभिनन्दन ग्रंथक प्रकाशनक क्रममे अहाँ कतबो सफाइसँ काज कयलहुँ, कतबो गोविन्द बाबूसँ मंचपरसँ लोककेँ कहबा देलिऐ जे एहि काजमे गोविन्द बाबू अथवा हुनक परिवार कतहुसँ शामिल नहि छनि मुदा लोक बुझिये गेल जे अहाँ आ ओ मिलि कऽ चन्दाक रसीद छपाबऽ सँ लऽ कऽ पोथीक सम्पादन-संशोधनमे सभठाम मिलिये कऽ काज कयलहुँ। आ हे, पोथीमे छपल पारिवारिक फोटो देखि कऽ तँ लोकक मोन आर माहुर भऽ गेलै जखन ओकर सोझां मे वैह चेहरा घूमऽ लगलै जे सभ ओहि काजमे लागल रहय।"

एतेँ बात कहैत-कहैत राजमोहनजीक दम फूलऽ लागल रहनि। ओ दम लैत फेर रमणजीकेँ हुथैत कहऽ लगलथिन-"मैथिलीक नव कविता, मैथिली नवीन कविता, श्यामानन्द रचनावली, निर्दयी सासु, जगन्नाथपुरीक यात्रा आ रुचय तँ सत्त

ने तँ फूसि आ कि कोनो आर रचना अपन अछि की? कते दिन एहि कोठीक धान ओहि कोठी करबाक तिकड़म करब। आ मैथिली साहित्यकेँ गिजैत-मथैत आब चेतना समितिकेँ सोधऽ चललहुँ अछि। औ जी, एकटा मेघन प्रसाद तँ नाक दने पानि पियौने छथि आ चललहुँ अछि तिकड़मबाज बनऽ।"

राजमोहनजी जा आर किछु बजितथि ता उदय चन्द्र झा "विनोद" गप्पकेँ लोकैत बाजि उठलाह- "भाइ साहेब बड़ भेल, अहाँ की कम छी? भीम भाइकेँ पुरस्कार नहि भेटि, अहाँकेँ पहिने भेटि जाय ताहि लेल अहाँ आ अहाँक कोरपच्छु अशोक, अग्निपुष्प आ केदार सभ मिलिकऽ कम तिकड़मबाजी कयने रही की आ अनेरे बेचारे रमणजीकेँ रेड़ने जा रहल छियनि।"

एहि तरहेँ उतराचौरीक दौर शुरू छल। अवसरक लाभ उठबैत बटुक भाइ शिविर स्थलक चारूभरक कैमरामैनकेँ छुटिकऽ सभ दृश्य लेबाक छूट दऽ देने रहथिन।

रमणजीक चोटकल मुँह देखैत विनोदजी पुनः टाहि लगौलनि-"हमरासँ पैघ तिकड़मबाज तँ एखन क्यो अछिहे नहि। जहियासँ रहिका बसलहुँ ताहियेसँ परमुंडे फलाहारक सिद्धान्त पर चलैत छी। दूध के दूध आ पानिकेँ पानि करैत छी। तहिना भीमनाथ होथु की रामदेव दुनूकेँ एक्के लाड़निये लाड़ैत छियनि आ जावत साहित्य अकादमीमे रहबनि तावत दुनूकेँ एकठाम नहि होमऽ देबनि चाहे एहि लेल हमरा पटनाक गुरुद्वारा (आर-ब्लाक) मे मत्था टेकऽ पड़य, दरभंगाक श्यामा मंदिर (राजकुमार गंज) क तिरपेच्छन करय पड़य आ कि प्रयाग (पी.सी. बनर्जी रोड) क चभच्चामे डूब देबऽ पड़य।"

रामदेव झा, जे शुरूसँ मठोमाठ भेल बैसल रहथि, केँ विनोदजीक ललकारापर नहि रहल गेलनि। फूटल थैल जकाँ चनकैत बजलाह " औ विनोदजी, अहाँकेँ जे मोनमे अबैए से अर्र-दर्र बजने जा रहल छी। बुझलहुँ जे अहाँ बड़का तिकड़मबाज छी। मुदा एखन धरि ने तँ अपने साहित्य अकादेमी जीतल भेल अछि आ ने अपन गुरुये जी सभकेँ दिआओल भेल अछि। सांत्वना पुरस्कार लैत-दैत समय खेपै छी आ डींग हँकैत छी जे बड़का तिकड़मबाज छी। हमरा, देखू हमरा, शेखरजीक लिखलाहा "अंग्रेजी फूलक चिट्ठी" अपना नामपर कराइये कऽ दम लेलिऐ आ इतिहासमे एहि तथ्यकेँ सूचीबद्ध करबा लेल शेखरजीक जीवनवृत्त, जे साहित्य अकादमी छपलक अछि आ जकर हमहीं "भेटर" सेहो रही, ताहिमे जबर्दस्ती एक लाइन जोड़बाइये देलिऐ जे "अंग्रेजी फूलक चिट्ठी" क लेखक रामदेव झा छथि। जँ अहूँ बड़का तिकड़मबाज छी तँ कोनो एहने कलामी काज कऽकऽ देखाउ तखन ने मानी।"

पुर्णेन्दु चौधरीकेँ एतबा सुनिते लेसि देलकनि। ओ लौंगिया मेरचाइ जकाँ

आगि उगलैत बजलाह- "यौ रामदेवजी, "अंग्रेजी फूलक चिट्ठी" अहाँक छल तँ 1985 मे जखन अनिल कुमार मिश्रक पोथीमे पहिल बेर ई गप्प सार्वजनिक भेलै जे ओ शेखरजीक कृति छनि तँ तहियेने दावा ठोकतिऐ। 1990 ई० मे जखन शेखरजी पुण्य लोक चलि गेलाह तँ मर्त्यलोकमे 1995 मे अहाँक निन्न टूटल की? अछि साहस तँ बाजू ने एखन जे "मैथिलीक पत्रकारिकताक इतिहास" मे अहीं अमरजीक सेहो डाँड़ धयने छलियनि। अछि साहस? हम जनैत छी जे नहि होयत। एकर कारण ई जे दुनू गोटे लोकक मरलेपर बजैत छी आ लिखैत छी जीबैत लोकक सोझाँ धार खसा कऽ लेनाइये सिखलहुँ चाहे ओ अर्थदान होअय की विद्यादान।"

"हौ पुर्णेन्दु!" हमरा अछैत तेँ एना बजबह। हमरासँ पैघ तिकड़मबाज के? "न भूतो न भविष्यति।" देखैत नहि छह, दरभंगामे रहनिहार सोमदेव, रमानन्द रेणु आ कि हंसराजकेँ हम बालिग होमऽ देलियनि? जे हमर चटिसारक चेला बनल तकरे परसाद दिऔलिऐ चाहे ओ भीमनाथ होथु की जयमन्त। आ हे, ईहो सुनिये लैह जे किछु दिन आर खेपि गेलहुँ तँ मदनेश्वरोकेँ पुँगाइये देबनि। करैत रहऽ तों सभ हल्ला-गुल्ला, थुक्कम-फज्झति। तिकड़मबाज जँ एकर सभक परवाहि कयलक तँ भेलैक ओकर काज।"

चन्द्रनाथ मिश्र "अमर"क उपदेश समाप्तो नहि भेल छल कि चारू भरसँ हल्ला-गुल्ला होमऽ लागल। जते मुँह तते बात। जयकान्त मिश्र माथपरक पाग सम्हारैत बजलाह " हमरासँ पैघ के? बड़का-बड़का लेखकक रचनाकेँ बिनु पढ़ने हम तेना ने इतिहास लिखि देलियनि जे क्यो ककरो मोजर नहि देतनि आ सभ भरि जिनगी भूल-सुधारे करैत रहि जयताह।" देवकान्त झा सफारी सूटक बटन बन्द करैत टिपलनि-हम जे इतिहास लिखि रहल छी ताहिमे सभ तिकड़मबाजक नाकमे कौड़ी बन्हैत बता देबनि जे अक्षरक मारि केहन होइ छै"। कुलानन्द मिश्र दाढ़ीमेसँ ढील निकालैत बजलाह-"हमरोसँ पैघ तिकड़मबाज अछि की क्यो? कोनो योजनाक भनक लगिते हम की जगह देखै छिऐ। सारक सहपर सार सभक योजना बिच्चहिमे घोसारि दैत छियनि।"

ई सभ घोल-फचक्का चलि रहल छल। मुदा भीड़क बीचमे एक गोटे चुप चाप बैसल मुस्किआइत चारू भर देखि रहल छलाह। बटुक भाइ बीच-बीचमे हुनका दिस देखि फेर अनका दिस देखय लागथि। ई सभ चलिये रहल छल कि बीच्चेमे गोपेशजी कड़कैत बजलाह-"बन्द करू ई सभ नाटक। बहुत भेल आब। बहुत कालसँ हम ई तमाशा देखि रहल छी बटुक भाइ। औ जी, अनका-अनका उतराचौरी करा कऽ अहाँ सभक ढोंढ़ी ढील कऽ रहल छिऐ। औ, सभसँ पैघ तिकड़मबाज तँ अहीं छी बटुक भाइ जे जेना शरदूक एक्के बौल पर विजय कुमार

मिश्र आ विवेकानन्द दुनू मैदानसँ बाहर भऽ गेलाह, जेना वीरेन्द्र झा अमरेश पाठककेँ पानि पिया देलथिन, जेना गोकुलनाथ एक्के पाउचमे प्रवासीकेँ लुढ़का देलथिन तहिना अहाँ दूरदर्शनक पर्दाक मुँह देखयबाक धरखने सभ साहित्यकारकेँ डुग्गी लऽ कऽ नचा रहल छिऐक आ जे सभसँ पैघ तिकड़मबाज अछि, जे मैथिली आकदमीक चारपर चारमैन बनि बैसल अछि तकरा पर ध्याने ने जाइत अछि।"

"धन्यवाद गोपेशजी धन्यवाद। अपने हमर इज्जत बचा लेलहुँ।" बटुक भाई मुस्काइत बजलाह।' फेर बटुक भाइ सबकेँ शान्त करैत छथि-"जँ गोपेशजी हमर ध्यान भंग नहि करितथि तँ जुलुम भऽ जाइत। अपने लोकनिक स्वाभाविक अभिनयकेँ देखैत एखन धरि जे अपने लोकनि प्रस्तुत कयलहुँ तकर शूटिंग कऽ लेल गेल अछि। एहि लेल हम क्षमाप्रार्थी छी। मुदा हमरा दूरदर्शनपर मात्र एक घंटाक कार्यक्रम देखयबाक समय भेटल अछि आ दृश्यक रिटेक होयबाक भयसँ हम तीन घंटाक दृश्य हेतु रील अनने रही। मुदा से बिना कोनो "रिटेक" कयनहि "ओ के" होइत गेल आ आब रील समाप्त भऽ गेल अछि तेँ हम एहि शिविरक समापनक घोषणा करैत छी।"

बटुक भाइ जावत अपन वक्तव्य समाप्त करथि तावत अशोक, तारानन्द वियोगी, रमेश, शिवशंकर आदि हुनका घेरि लैत छथिन आ दस हजार फज्झति करय लगैत छथिन जे शूटिंग शुरू भऽ रहल छै से अहाँ किएक नहि घोषणा कयलहुँ । सब बुढ़बा बोकराती कऽ गेल आ हम सभ शूटिंग प्रारंभ होएबाक भरोसे बैसले रहि गेलहुँ। आइ हम सब अहाँकेँ नहि छोड़ब चाहे अहाँ उषाकिरण खाँकेँ बजबियौनु वा मन्त्रेश्वर झा ओतऽ सनहा लिखाउ।

बटुक भाइ अपन जान बचयबा लेल कहैत छथिन-"औ जी, एखन तँ एकर शूटिंगे भेलैक अछि,संपादन तँ बाँकिये छै। अहाँ सभकेँ एहि काज लेल सुरक्षित राखल गेल अछि। ओहीमे देखा देबै अहाँ सभ अपन मर्दानगी।" जेना-तेना बटुक भाइ अपन जीपपर चढ़बा लेल आगाँ बढ़ैत छथि कि घामे-पसीने भेल गुंजनजी ओतऽ पहुँचैत छथि आ हुनकासँ पुछैत छथिन " शूटिंग भऽ गेलै की बाँकिये छै? हमरा आबऽ मे कने देरी भऽ गेल। जँ कोनो गुंजाइश होइ तँ हमहूँ किछु...।' "फाइनल कार्यक्रमक प्रस्तोता अहीं रहब। हम तँ मात्र निर्माता-निर्देशक छीं, तेँ ओहि अवसर पर जे-जे होअय से सुनाकऽ भजारि लेब जे अहाँ सभसँ पैघ तिकड़मबाज छी की हम?' ई बजैत बटुक भाइ जीप स्टार्ट कऽ ओतऽ सँ प्रस्थान करैत छथि।



रिपोर्ताज

स्वास्थ्य-रक्षा पुरस्कार

फगुआक अवसर पर आयोजित साहित्यकारक विशेष 'प्रश्नमंच' कार्यक्रम छिटफुट घटनाकेँ छोड़ि शान्तिपूर्वक सम्पन्न भऽ गेल। एहि प्रतियोगिताक आयोजन शेखर प्रकाशन द्वारा किछु उग्रवादी साहित्यकारक धमकी देलापर कयल गेल छल।

ज्ञातव्य अछि जे बिनाका गीतमालाक तर्जपर आयोजित एहि प्रश्नमंचमे समग्र साहित्यकार (रमानन्द रेणु, हंसराज, पूर्णेन्दु चौधरी एवं रहिकाक दुलहा उदयचन्द्र झा 'विनोद' केँ छोड़ि) भाग लेने छलाह जाहिमेसँ 16 प्रतियोगीक उत्तरसँ संतुष्ट भऽ एक सदस्यीय निर्णायक मंडलक अध्यक्ष आचार्य सुमनजी जे सूची जारी कयने छलाह से एहि प्रकारेँ अछि- सर्वश्री सुरेश्वर झा, राजमोहन झा, मार्कण्डेय प्रवासी, मोहन भारद्वाज, भीमनाथ झा, प्रभास कुमार चौधरी, जीवकान्त, शेफालिका वर्मा, कीर्तिनारायण मिश्र, मन्त्रेश्वर झा, अग्निपुष्प, सुभाषचन्द्र यादव, मायानन्द मिश्र, डॉ. धीरेन्द्र, सोमदेव आ केदान कानन। श्री उपेन्द्रनाथ झा व्यास, डा. अमरेश पाठक एवं आनन्द मिश्र निर्णायक मंडलमे नहि राखल जयबाक कारणे एहि प्रतियोगिताक बहिष्कार कऽ देलनि।

निज संवाददाता(सुकान्त) द्वारा प्राप्त सूचनाक अनुसार एहिमे सम्मिलित सभ साहित्यकार लोकनिसँ एक्केटा प्रश्न पूछल गेल छल-पं॰ गोविन्द झाकेँ साहित्य अकादमी पुरस्कार किएक भेटलनि? आयोजनसँ पूर्व ईहो घोषणा कयल गेल छल जे अंतिम पांच गोटेक उत्तरकेँ आमंत्रित श्रोताक समक्ष एकटा भव्य समारोहमे सुनाओल जायत आ सर्वप्रथम भेनिहार साहित्यकारकेँ 'फगुआ शिरोमणि' सम्मान सँ पुरस्कृत कऽ हनुमानी भेषमे दरभंगा, सहरसा होइत नेपाल धरि निःशुल्क बौअयबाक सुविधा देल जायत।

प्राप्त समाचारक अनुसार कार्यक्रमक प्रारंभ शान्ति सुमन एवं बुद्धिनाथ मिश्र द्वारा गाओल गीत-'आब कहू मन केहन लगैए' सँ भेल आ तत्पश्चात् अध्यक्ष द्वारा चयनित अंतिम पांच गोट उत्तरकेँ आकर्षक ढंगसँ सुनयबाक भार मैथिलीक मृदुभाषी अमीन सयानी श्री छत्रानन्दजीकेँ देल गेलनि। मुदा हुनक नाम सुनैते मातर साहित्यकार लोकनि हल्ला-गुल्ला करैत अध्यक्षक आसन लग आबि आपत्ति कयलनि जे छत्रानन्दजी एखन बटुक छथि आ ओ बिनु पढ़नहि उत्तर सभकेँ

उनटा-पुनटा कऽ सुना देताह तेँ ई भार अनका देल जाइनि। अध्यक्ष फगुआक अवसर पर साहित्यकारक उफनल जोशकेँ शान्त करबा लेल अशोककेँ मंचपर बजबैत छथिन। अशोकजी सकुचाइत-मुस्काइत मंच पर अबैत छथि। हुनक हाव-भाव आ चालिसँ मोहित भऽ सभ अपन-अपन स्थान धऽ लैत छथि-हल्ला गुल्ला शान्त भऽ जाइत अछि।

अशोकजी अंतिम पांच गोट उत्तरक पुर्जी अध्यक्षसँ ग्रहण कऽ माइकक ठोढ़ मे ठोढ़ सटबैत बजैत छथि-सभ दिन 'नेतागिरी' कयनिहार जखन कोनो रस्ता नहि देखि 'पलायन' करय जा रहल छलाह तँ हुनका अन्ततः सफलता भेटिये गेलनि। एहन जे कथाकार भाइ साहेब अर्थात श्री राज मोहन झा छथि, से हमर पांचम पौदान पर अपन उत्तर लऽ कऽ ठाढ़ छथि। हुनक उत्तर अछि- 'गोविन्द बाबू हिन्दी बजबाक संग-संग हिन्दीमे लिखऽ नहि लागथि तेँ हुनका पुरस्कार देल गेलनि अछि।' ई घोषणा होइतहि विनोद कुमार झा, अग्निपुष्प, आ वियोगी मिलि श्री झाकेँ कनहापर उठा कऽ झूमऽ लगैत छथि आ अरुण आचार्य तड़ातड़ खाली बोतलकेँ पटकि फटक्का छोड़ऽ लगैत छथि।

फटक्का सभक आवाज खतमो ने होइत अछि कि चारिम पौदानपर अशोकक स्वरमे सुरेश्वर झाक गीतनुमा उत्तर गुंजय लगैत अछि- 'जेँऽऽऽ हमरा ऽऽ स ऽऽऽ न प्रतिऽनिधिऽ, तेँऽऽऽऽ गोविन्द बाबू केँऽऽऽ पुरस्काऽऽर....।'

उपस्थिति श्रोता झूमऽ लगैत अछि। जोशमे आबि अशोकजी एहि उत्तरकेँ रूना लैला जकाँ थिरकैत गाबऽ लगैत छथि। रविन्द्रनाथ ठाकुरकेँ रहल नहि जाइत छनि आ ओ लोककेँ धकियबैत कोनहुना मंचपर चढ़ि अशोककेँ पाँजमे भरि लैत छथि आ महेन्द्रकेँ तलाक दऽ हुनकासँ मंगनी करबाक घोषणा करैत छथि।

अध्यक्ष सिलौट पर लोढ़ी पटकैत दुनूकेँ फराक होयबाक संकेत करैत कार्यक्रम आगाँ बढ़यबाक आदेश दैत छथि। अशोक धोती अंगा झाड़ैत पुनः माइकपर अबैत छथि आ कहैत छथि- ढौए ढाकी कथा लिखि ओहिमे हीरो जकाँ स्वयं उपस्थित रहनिहार श्री प्रभास कुमार चौधरी एहू प्रश्न मंच कार्यक्रममे तेसर पौदानपर आबि अपन आत्मप्रशंसात्मक उत्तरसँ बाज नहि अयलाह अछि। हुनक उत्तर अछि- 'गोविन्द बाबू सार्वजनिक रूपेँ जेँ ई मानि लेलनि जे हुनकर कथा हमरा आ मामा (गुंजन) सँ घटिया छनि तेँ हम हुनका परीक्षोतीर्ण कऽ देलियनि।

ई उत्तर सुनिते डा. अक्कूक ब्लडप्रेसर हाइ भऽ जाइत छनि। ओ अर्र-दर्र बजैत-बजैत लटुआ कऽ खसि पड़ैत छथि। विभारानीक नजरि पड़ैत छनि। ओ आँचरसँ अक्कूक मुँह पर हवा करैत छथि। किशोर, रमेश आ कुमार शैलेन्द्र दुनूकेँ ईर्ष्यासँ देखैत छथिन।

अक्कूकेँ होश अबैत छनि। हुनक ध्यान माइकक आवाज पर जाइत छनि। अशोक दोसर पौदान धरि अबैत-अबैत निधोख भऽ बाजय लगैत छथि। ओ बिना लाज लेहाज कयने गदाधारी लंगूर भक्त भीमनाथ जीकेँ अपना दिस आकृष्ट करैत हुनक उत्तररूपी गीतकेँ मीरा जकाँ गाबि कऽ सुनबऽ लगैत छथि- 'धन ओ लेखक हम रमचेलबा, धन रमचेलबा, धन रमचेलबा-धन ओ लेखक।'

एकाएक अध्यक्षक गरम मूड देखि अशोकजी गीत गायब बन्न कऽ दैत छथि आ अंतिम पौदान अर्थात सर्वश्रेष्ठ उत्तरवला पुर्जी निकालैत छथि। सरसरी तौर पर पढ़ऽ चाहैत छथि मुदा काँटी जकाँ ठोकल एक एकटा अक्षर हुनका बेसम्हार कऽ दैत छनि। हुनका आगाँ अन्हार जकाँ पसरय लगैत छनि। अध्यक्षक आसनं पर बैसल सुमनजी स्थितिकेँ गमैत छथि। कहैत छथिन-'अशोक अहाँ घबड़ाउ नहि। जे अहाँ पढ़ यजा रहल छी से फूसि नहि छै, सत्य छै आ सत्य कटु होइते छै। अहाँ निधोख भऽ कऽ पढ़ू, जयकान्त बाबूक जमाना नहि छनि जे सब काज पाइये पर हेतै, आब किछु पैरबीयोपर हेतै। हम जावत छी तावत अहींकेँ मंच भेटत। तेँ आब निधोख भऽ कऽ पढ़ू।'

अशोकक ध्यान टुटैत छनि आ ओ एकबेर उमानाथ बाबू दिस तकैत छथि, फेर चेतकर बाबू दिस झंकैत छथि, मुदा सुभद्र बाबूक हाथमे लाठी देखैते मातर सहसा हुनका मुँहसँ अन्तिम अर्थात प्रथम पौदान पर ठाढ़ भेनिहार व्यक्ति नामक स्थान पर सर्वश्रेष्ठ उत्तर बहरा जाइत अछि-'गोविन्द बाबूकेँ जँ एहि बेर ई पुरस्कार नहि भेटितनि तँ ओ बताह भऽ जइतथि, तेँ ई पुरस्कार हुनक स्वास्थ्य-रक्षा लेल देल गेलनि अछि।'

उपस्थित श्रोतामे सँ डा. बासुकी नाथ झा आ डा. लेखनाथ मिश्र सर्वश्रेष्ठ उत्तर देनिहारक नाम पूछय लगैत छथि मुदा जावत अशोक पुर्जी पर लिखल नाम पढ़बाक उपक्रम करथि, मोहन भारद्वाज मंचपर चढ़ि हुनकासँ माइक छीनि लैत छथिन आ ओ स्वयं घोषणा करैत छथि जे एहन उत्तर वैह टा दऽ सकैत छथि, रमानन्द झा 'रमण' नहि।

सुमनजी हुनका लग बजा कऽ पीठ ठोकैत छथिन आ 'फगुआ शिरोमणि' क उपाधिसँ अलंकृत कऽ हुनक हाथ हवामे उठा दैत छथिन। कुलानन्द मिश्र अपन प्रतिज्ञा केँ पूरा होइत देखि अपन दाढ़ी छटयबाक हेतु उपेन्द्र ठाकुर ओतऽ जयबा लेल विदा भऽ जाइत छथि।



धन्य लालूजी जे आइ..

खाहे लोक जे कहय मुदा एतबा धरि सत्य अछि जे आजुक तिथिमे बिहारक धरती पर लालू बाबू सन 'मर्दाना', मैथिली भाषी सन 'जनाना' आ भाजपा नेता सन बिन पैजामाक लोकक जेहन जुटान अछि तेहन विश्वक कोनो कोनमे नहि होयत। कारण, लालू बाबू अपन जिद्दीपना लेल, मैथिली भाषी अपन पिद्दीपना लेल आ बिहारी भाजपा नेता सभ अपन बचपना विचार लेल ख्यात छथि।

बिहारक धरती पर लालू बाबू जहियासँ अपना खटाल पसारने छथि तहियेसँ जे मोनमे अबैत छनि सैह करैत छथि। 'एकोहं' वला सिद्धान्त हिनका सबसँ प्रिय छनि। जे कहि देताह ताहि पर अड़ल रहताह भने ओ अधलाहे काज किएक ने हो। तेँ ने ओ मैथिलीकेँ जखन एक बेर बिहार लोक सेवा आयोगसँ निष्कासित कऽ देलनि तँ कऽ देलनि। कतबो कियो नाक दरड़लक नहि पिघललाह ओ। अपन मर्दानगी पर अडिग रहलाह। तहिना मैथिली भाषी लोक सेहो अपन मातृभाषाक अपहरणक बादो अपन पिद्दीपनाकेँ नहि छोड़लनि। मिथिलाक अनेको नेता-अभिनेता एहि योग्य छलाह जे मिलिकऽ संघर्ष करितथि तँ मायक मुँहमे लागल जाबीकेँ खोलबामे समर्थ होइतथि। मुदा ओ सभ राजनीतियेकेँ दूहब पसिन्न कयलनि।

आम जनता तँ सहजहि पित्तमरू। खेत-खढ़िहान डूबि जाय, डूबि जाओ, आवागमनक सुविधा नहि रहओ, कोनो बात नहि। धीया-पुता मूर्ख रहय, धन सन। नोकरी-चाकरी नहि भेटय, पानिये पीबि रहि लेब- यैह स्वभाव। किएक लड़ब अपन हक लेल? तहिना मैथिली भाषी संस्था सभ अराड़ि लेबऽ मे आगां आ टिटकारी देबऽमे माहिर। संघर्षक दिनमे निपत्ता आ उपलब्धि भेटलापर सूप सन छाती देखयबामे जाबीर।

आ भाजपा नेता लोकनिक तँ भिन्ने बथान। बजताह किछु, करताह किछु। चुनावक समयमे मैथिलीक मादे बहुत किछु बजलाह मुदा चुनावक बाद जखन तत्कालीन भाजपा नेता पं० ताराकान्त झा मैथिली लेल काज प्रारंभ कयलनि तँ हुनका भाजपा सँ निष्कासित कऽ देल गेल। आ जखन वैह पं० ताराकान्त झा लालूजीक सरकारकेँ मधुर-मधुर मैथिली बाजि पटना उच्च न्यायालयमे पटकनियाँ दऽ मैथिलीकेँ लोकसेवा आयोगमे शामिल करबा लेल बाध्य कऽ देलनि अछि तँ

ओ लोकनि मैथिलीक प्रति जे प्रेमाभिव्यक्ति कऽ रहलाह अछि ताहिसँ ककरो ईर्ष्या भऽ सकैत छैक। बिन पैजामाक एहि नेतालोकनिमे सत्तेमे मोंछवला नेता (पं० ताराकान्त झा) क नहला पर दहला मारबाक शक्ति छनि आ ठीके ओ लालूजीक नाकमे कौड़ी बान्हय चाहैत छथि तँ संविधानमे किछु नव भाषाकँ जोड़बा लेल जे समिति गठित कयल गेल अछि तकरा पर दबाब दऽ कऽ मैथिलीकँ आठम अनुसूचीमे शामिल कराबथु तखने हुनक बचकानी स्वरूपक खंडन होयतनि अथवा नहि।

रहल एहि बाजीमे के जीतल आ के हारल तँ एहि बात पर स्पष्ट रूपें कहल जा सकैछ जे धन्य लालूजी जे 80 वर्षक मिथिलाक मोंछवला मिथिलाक नेता कुंवर सिंहमे जोश भरि देलनि जे ओ एहि संघर्षमे कूदि पड़लाह, धन्य ओ मैथिल संस्था सभ जे मोकदमाक संघर्षमे कहियो जिज्ञासा धरि नहि कयलक, धन्य ओहि नेता लोकनिक जे पन्ना-पन्नामे आइ बधाइ-संदेश छपा रहल छथि, धन्य ओहि मैथिलीक पाइ खयनिहार विद्वान लोकनिक जनिकर विद्यालय, महाविद्यालयक दोकान बन्द होयबा पर छलनि, धन्य मैथिली भाषी लोकनिक जे सभ दिन चुपचाप सबटा हक पयबा लेल देवी-देवता टाकँ गोहरबैत छथि आ धन्य मैथिली भाषी युवक लोकनिक जे आब मैथिलीक नाव पर सवार भऽ अपन भविष्य चमकौताह। जँ उपयुक्त महानुभाव लोकनिक सहयोग नहि रहैत तँ मैथिलीक दिन नहि फिरैत। ओना लालू बाँबू एहि मामिलाकँ सर्वोच्च न्यायालयमे लसका कऽ फेर अपन मर्दानगी प्रमाणित कैए देलनि अछि। आ जहाँ धरि मिथिला राज्यक प्रश्न अछि तँ ओहो दिल्ली दूर नहि। मुदा देखबाक ई अछि जे दिल्लीक ई लड्डू खयबाक लेल के कतेक जल्दी मुंह खोलैत छथि। ओना विश्वस्त सूत्रक खबरि अछि जे मिथिला राज्यक लड्डू बंटबा लेल ककरो सँ बेसी लालू जी आतुर छथि किएक तँ ओ मर्दानगी तँ हुनकेमे छनि, भाजपा, कांग्रेसी नेतामे नहि। तँ ओ एखनहिसँ मिथिलाक राज्यक मार्ग प्रशस्त करबा लेल काशी केँ अपन राजधानी बनयबाक विचार कऽ रहल छथि। तँ विवश भऽ कऽ कहय पड़ि रहल अछि जे धन्य लालूजी जे आइ मैथिली.....।



सम्पादकक नाम.....

सम्पादकजी,

फगुआ आबि रहल अछि आ संभवत: अहाँ फगुआ अंकक तैयारी हेतु टेबुल पर रंग-बिरंगक कलमतोड़ लेखकँ शोधैत होयब। भांगक निशामे नीक अक्षर अहाँकँ मुनक्का आ खराब अक्षर ठुनका सन लगैत होयत। फगुआयल लेखपर ललका मोसिबला कलमकँ तरुआरि जकाँ चलबैत अपने अपनाकँ वीर कुंवर सिंह बुझैत होयब। मुदा ई जुनि बिसरियौ जे जाहि लेखपर अपने तरुआरि भजैत छिऐक सैह इतिहास बनि जाइत छैक आ जाहि ढहलेल-बकलेलकँ अपने खरहड़ा कऽ लेखक बनबैत छिऐक सैह मुङबा-सकरौड़ी पयबाक अधिकारी भऽ जाइत अछि आ अपने रहि जाइत छी ओहिना जेना मुर्दाघरमे पोस्टमार्टम कयनिहार टिटिआइत रहैत अछि।

तँ सम्पादकजी, अपनेसँ आग्रह, मिनती आ लगले नेहोरा जे अपने अपन कलमरूपी तरुआरिकँ कने कमे भजियौ, पाण्डुलिपिकँ पाण्डुलिपि रहय दियौ। शोध त-शोधैत ओकरा सिट्ठी नहि बनबियौ। समय बचाउ, किछु अपनो ले करू!

सम्पादकजी! अहाँकँ तँ देहो ने डोलबऽ पड़त। बैसले-बैसले आचार्य-प्राचार्य भऽ जायब। मुङबा-सकरौड़ीकँ के पूछय, राबड़ीक सहपर रसगुल्ला अपनहि टघरैत आबऽ लागत! खाली अपनेकँ टेबुलपर आयल सामग्रीमेसँ अपना ले किछु छाँटऽ पड़त, ओहिमे किछु जोड़ऽ पड़त, किछु काटऽ पड़त। प्राय: सामग्रीदाताक नाम काटऽ पड़त, अपन नाम जोड़ऽ पड़त।

एतेक दिन हम अपनेक विचारसँ सहमत छलहुँ मुदा जँ कि फगुआ छैक तँ हम अपनेसँ सहमत नहि छी। अपने आब हमरो विचारपर ध्यान दियौक, हठ नहि करू! एहिमे कोनो दिक्कति नहि होयत! लिखाड़ लेखकसँ बेसी देखार भऽ जायब अपने।

अपनेकँ कोनो प्रकारक चिन्ता नहि रहत। आगत अतिथिसँ गुलगुल्ला खाइत रहब, गुलछर्रा उड़बैत रहब। क्यो नहि रोकत, क्यो नहि टोकत! बस आब एतबे, नहि तँ अहाँ रंज भऽ जायब। परोक्षेमे मार स्सा.... कहबासँ पहिनहि अपनहि मुँहक पानक पीकसँ सराबोर भऽ जायब।

हे सम्पादकजी! हमर ई स्नेह-पत्र अबस्से छापब नहि तँ अगिला फगुआमे ई जानि लियऽ जे सारि जकाँ अहूँकँ नहि छोड़ब।

अपनेक शुभ चिंतक

-फचांड़ि मिसर



एकालाप

'हम, हम.... भाइ साहेबकेँ नहि छोड़बनि... हिक्.... नहि छोड़बनि.... की. .... की बूझैत छथि ओ अपनाकेँ..... हिच्च।' भारद्वाजजी अर्र-दर्र बजैत, टग हनैत, खन आगां, खन पाछां देखैत आफिसर्स फ्लैटसँ निकललाह। हुनका एना निशामे धुत देखि आश्चर्य भेल। जरूरे हिनका संग क्यो...... कयलथिन अछि से सोचि ओहीठाम स्थित अशोकजीक फ्लैटक दिस झंकैत छी तँ सब बात फरिच्छ भऽ जाइत अछि।

ओहिठाम अशोकजीक नेतृत्वमे रमेश, वियोगी, श्रीनिवास सब भांगि पीबि ठहाका पर ठहाका लगा रहल छलाह। अशोकजी थपड़ी पिटैत सभकेँ कहलथिन जे आब गुरुजीक एकालाप सुनबा योग्य होयत। बड़ी कहैत छलाह जे नहि पीब भांग मुदा देखलियनि ने जे भाइ साहेबक नामे लैत कोना जग भरि शर्बत अपना मने सुरकि गेलाह। अरे, हमरा ई रमचेलवा बुझैत छथि, आब देखबनि तमाशा जे के गुरु आ के चेला। चलैत चलू देखियनि कोन-कोन रंगताल करैत आब ई गाम पर पहुँचैत छथि।

जावत अशोकजीक टोली सड़कपर आबय ता हम छड़पि कऽ दोसर दने भारद्वाजजीक आगां पहुँचि गेलहुँ। अशोक जी सभ पाछां-पाछां आ हम रंगल-ढ़ौरल चेहरा नेने हुनकासँ लागले भिड़ल चलय लगलहुँ।

'ऐ भाई साहेब... राजमोहन झा को देखें हैं... (हँसैत, फेर डपटैत) अरे वही दाढ़ी वाले... हिच्च.... हमको.... हमको ऊ निगल गये.....।' फेर चुप भऽ गेलाह भारद्वाजजी।

एकाएक हमर देह पर लटकैत जेना बजलाह 'अइसा समयमें..... धोखा-धोखा दिया..... नहीं.... नहीं.... छुरा मारा, छुरा कि मैथिलवा सभ हमरा अहू बेर बारि दिआ... हिच्च। साहित्यमे अकदमीसँ।' भारद्वाज जी चुप भऽ गेलाह। पाछां तकैत छी तँ देखैत छी तारानन्द वियोगी ई कहैत- 'लड़ाइये देलिअइ अशोक भाइ अहाँ दुनू पीठाचार्यकेँ' अशोकजीक कन्हापर उछलिकऽ बैसि गेलाह।

जावत हम अशोकजी सभ दिससँ नजरि फेरी तावत देखैत छी जे भारद्वाजजी हाइकोर्टक सोझां अवस्थित अम्बेदकरक मूर्तिसँ कहि रहल छथि- अहीं कहू भाइ, हमर कोन दोष... हिच्च... हमहूँ तँ अहीं जेना ने मैथिली साहित्यकेँ, संविधानकेँ

स्रोर मट्ठा कऽ रहल छीऐ। की नै..? तखन हमरा किए, किए ने क्यो पाग पहिरबैए, किए....। ओऽऽ आ-आब बुझलहुँ.... अहूँ नहि बाजब..। नहि छोड़ब. ..। नहि छोड़ब अहाँकेँ भाऽऽइ साहे...ब। अहाँ हिनको पढ़ा... मैथिल डकूबाऽऽ सभ....।'

हम कने पाछां हटैत छी। रमेश मन्द-मन्द मुस्काइत, अपने गाल पर अबीर रगड़ैत श्रीनिवाससँ कनफुसकी करैत छथि-'नइं बुझलिअइ, पछिला भरो दशक ई साहित्यकार सभकेँ टिटकारी दऽकऽ नचौलथिन अछि, आब केना अहुरिया काटि रहल छथि। हम कहैत छियनि जे हमर सहरसा टीममे बहाल होउ तँ नइं मानै छथि। आब बुझथु।'

तावत देखै छी की जे भारद्वाजजी एकटा दाढ़ीवलाक गरदनि पकड़ने झकझोरि रहल छथि-नहि छोड़ब भाइ साहेब.... साहित्य... अका.... प्रक्रिया.... क शुरूहेमे अहाँ हमरा नाङट कऽ देलहुँ.... तेँ हम... हम.. हम नहि भऽ.... किदन भऽ गेलहुँ आ हमरा....। नहि छोड़ब आइ अहाँकेँ।'

जावत ओ दाढ़ीवला किछु बुझय, तावत भारद्वाजजी ओकर कपड़ा चिर्री-चिर्री कऽ देलथिन।

'यौ-यौ, होश मे आउ। की भऽ गेलए अहाँकेँ? किए एना बहकि रहल छी? हम भाइ साहेब नहि छी, हम छी कुलानन्द, कुलानन्द मिश्र। किए एना बताह जकाँ कऽ रहल छी?'

नहि छोड़ब नै... छोड़ब भाइ साहेब, की बुझै छी अहाँ हमरा। देखै छिऐ. ..केओ हमर आश्रमकेँ गुरुद्वारा, हँ-हँ गुरुद्वारा मानैए, केओ हेड क्वाटर। आ हे हम... हमहीं अब्दुल्ला बोखारी.... बोखारी जकाँ फतवा दै छिऐ तँ मैथिलीमे चाल.... चूल होइ छै।....

(माथ झारैत).... भेलै ककरो साहस हमरा खिलाफ अहाँक हँमे हँ मिलयबाक, नै हेतै, नै हेतै, हम कहै छी नहि हेतै, हमरा खिलाफ लिखबाक। अरे, माफिया, माफिया बना कऽ अहाँकेँ की भेटल.... नइं भेटल तँ हमरा। हाथमे हिच्च.... हाथमे अरे हाथमे अबैत अकादमीमे साहित्य गरै माछ जकाँ ससरि भागि गेल आ अहाँ, अहाँ दाढ़ी छटा कऽ सड़क पर टहलान मारै छी।' कने काल बिलमैत छथि भारद्वाजजी आ फेर झपटैत छथि कुलानन्द जी पर। 'नहि छोड़ब अहाँकेँ भाइ.... साहेब, अहाँकेँ गौरीक नाथ रक्षा नहि कऽ सकत.... अग्निक पुष्पो नहि हमर किछु बिगाड़ि लेत आ ने यादवक सुभाष किछु टेढ़ कऽ सकत।. .. हे, देखै छी, के बचबैए अहाँ केँ.।...

जावत कुलानन्दजी बचबाक कोशिश करैत छथि तावतेमे भारद्वाजजी हुनक दाढ़ी धऽ लैत छथिन आ फेर किदन कहाँदन बाजऽ लगैत छथि।

स्थिति बेसम्हार होइत अशोकजी आ वियोगी प्रकट होइत छथि आ कुलानन्दजीकेँ सहयोग करैत भारद्वाजजीकेँ कब्जामे लैत छथि आ जबरदस्ती रिक्शापर बैसाकऽ आर ब्लाक लऽ जाय लगैत छथि। अकस्मात कुणाल जी स्कूटर रोकैत हालचाल पूछऽ लगैत छथिन। भारद्वाजजी जे तीनूक फांसमे फंसल छलाह कुणालजीक दाढ़ी पर नजरि पड़िते तीनूकेँ झारि कऽ खसा दैत छथिन आ गुम्हरैत बजैत छथि- 'नहि छोड़ब अहाँकेँ, नहि छोड़ब, अहाँकेँ की होइए जे स्कूटरसँ पड़ाकऽ बचि जायब.... कतहु जायब हम नहि छोड़ब.. जेना अहाँ हमरा कतहुक नहि छोड़लहुँ, हमहूँ नहि छोड़ब।'

भारद्वाजजी कुणालजीक गट्टा धरैत कहैत छथिन- 'हे यौ अहाँक... अहाँ 'आरंभे' सँ माफियागिरी करै छी, 'झुठ सांच' करैत सभ दिन टिप्पणी सभ, हैं यौ.... टिप्पणीत्यादि लिखलहुँ, केओ चढ़ि बैसय तँ 'गलतीनामा' सेहो स्वीकारै छी आ.... आ हमरा-हमरा माफिया बना कऽ भुस्साथरि बैसा देलहुँ।'

कने काल बिलमै छथि भारद्वाजजी। आँखि निन्नसँ मुनाय लगैत छनि। कुणालजी किंकर्तव्यविमूढ़ सन मुद्रामे कातमे ठाढ़ अशोक, कुलानन्दजी आर वियोगी दिस प्रश्नवाचक दृष्टिये तकैत छथि।

भारद्वाजजीक फेर भक्क टुटैत छनि आ ओ हाक्रोश करैत छथि- 'सभ बइमान अछि यौ विद्यापति.... ककरा-ककरा ने साहि-साहि कऽ डिग्गा बनौलिऐ... रामदेव झा सँ उदयचन्द्र झा धरि केँ, जीवकान्त सँ लऽ कऽ गौरीकान्त... कान्त धरिकेँ ... भट्ठा धरबैत .. धरबैत औंठा छाप धरि देनाइ सिखौलिऐ.... संपादक बनि-बनि कऽ कतेकोकेँ साहित्यकार बनौलिऐ, दरभंगा-पटना-करैत दिल्ली धरि पठौलिये मुदा सभ-सभ... सभ... एक्के टिटकारी पर नठि गेल...। नहि छोड़ब भाइ.... साहेब... नहि... भाइ.. छोड़बऽऽ नहि.... साहेब.... छोड़ब भाइ।'

भारद्वाजजीक आँखि मुना जाइत छनि आ कुलानन्दजी लप दऽ सहारा दैत हुनका अपन कनहा पर सुता लैत छथिन। रिक्शा पर सभक सहयोगसँ चढ़ाकऽ आर.ब्लाक लऽ जाइत छथिन।

कुणालजी मुँह बिचकबैत स्कूटर स्टार्ट करैत विदा होइत छथि आ अशोकजीक टोली भाइ साहेबकेँ बुत्त करबाक योजना बनबैत घग्घाघाट दिस नचैत-कुदैत विदा होइत अछि। हमहूँ आगांक खेल देखबा लेल हुनका सभक पछोड़ धऽ लैत छी।



सफेदपोशक भतार

हमर अस्तित्व नहि अछि मुदा हम सभठाम विराजमान छी। बहुतो गोटे जे राताराती सुख समृद्धिक सागरमे उमकैत छिलकैत प्रख्यात होइत छथि ओ बिना हमर सोङरक आगाँ नहि बढ़ैत छथि। ओना हम अहाँकेँ बता दी जे हमर पालन-पोषण कयनिहार बड़कासँ बड़का कलामी लोक कहियो छाती ठोकि कऽ हमर एकबाल नहि मानताह। हमरे बलेँ सिकन्दर बननिहार दस लोकक बीचमे हमरे गरियौताह, हमरे अछूत कहताह आ हमरा उखाड़ि कऽ फेकि देबाक संकल्पो लेबामे कनिको नहि धखौताह। जँ जोशमे आबि जयताह तँ हमरा देशनिकाला देबा लेल जनता-जर्नादनक आह्वान सेहो करताह।

मुदा जनैत छी अहाँ-हमहूँ अक्खज छी। जतेक लोक हमरा उखाड़बाक प्रयास करैत अछि हम अमरलत्ती जकाँ ततबे बेसी चतरले जा रहल छी। कलियुगक दुलरूआ पुत्र छी हम, तेँ हमरा मारि सकबाक सामर्थ्य ने तँ आजुक लोकसेवक नेतालोकनिकेँ छनि आ ने सरकारी सेवामे लागल अधिकारी-पदाधिकारी केँ। ई बात दीगर अछि जे जे हमरा शरणमे अबैत छथि तनिका हम धनसँ छारि दैत छियनि, पकड़लो गेलापर धनबुद्धिसँ उबारि लैत छियनि आ अपन विरोधी केँ बीच चौबटिया हाथ-पयर ततारि पर दैत छियनि, गरीबीक मारि सहबा लेल बजारि दैत छियनि आ जँ ताहूसँ नहि मानैत छथि तँ अपन चेला-चटियाकेँ उसका कऽ जहलक भीतर जाय लेल खेहारि दैत छियनि। ओना हम जनैत छी जे-जे हमरा गरियबैत अछि, सार्वजनिक रूपेँ हमर उपहास करैत अछि, हमरा निकाल-बाहर करबाक बेर-बेर उद्घोषणा करैत अछि, ओएह हमर मित्र अछि, ओएह हमर पोषक अछि आ सभसँ पैघ समर्थक अछि।

सच पुछू तँ हमरो यैह नीको लगैत अछि। जनैत छी किएक? तँ सुनू कहैत छी- जँ सोनाकेँ आगिमे नहि धधकाओल जयतैक तँ की ओ चमकत? जँ ओकरा पीटल नहि जयतैक, जँ ओकरा तोड़ल मरोड़ल नहि जयतैक तँ की ओ देखनुक भऽ सकत?

अहीं कहू जे ई सभ उकठपनी ओकरा संगे नहि होयतैक तँ ओ ककरो गराक हार, ककरो कर्णफूल, ककरो मनटिक्का आ की ककरो नाकक नथिया बनि कऽ चमकि सकत? जेँ ओ हमरे जकाँ पीटल जाइए, डाहल जाइए आ बड़काओल जाइए तँ ओकर ई ठाठ-बाट। यैह सभ देखि कऽ हमहूँ निचैन रहैत छी जे जतेक

क्यो हमरा ठोकइए-बजबैए ततेक हमर एकबाल बढ़ैए , हमर मोल बढ़इए।

आब आउ, हम अहाँ कें अपन एकबालक झाँखी देखबैत छी आ संगे ईहो बतबैत चलैत छी जे हमर पोषक-समर्थक कोना हमरा बलें आगाँ बढ़ैत छथि।

वर्तमान युगक नेतालोकनिकें लियऽ। की ई सभ लोकसेवाक बलें चर्चित प्रशंसित भऽ रहल छथि? नहि, कदापि नहि। जँ हवालाक दिवाला नहि निकलितय, यूरियाक उर्वरताक तेजस्विता नहि दमकितय, वर्दीकांडमे पुलिसिया बाहुबलक प्रभाव नहि पसरितय, पशुक पालनमे नटबरलालक सूत्रक पालन नहि होइतय, अलकतरा कांडमे अभियंता लोकनिक पोथी-पतरा नहि काज करितय तँ की पटना सन उपेक्षित राजधानीमे अहाँ बाइस महलक मकान आ कि बारह महलक ऊपर दोकान देखबाक सपना पूरा कऽ सकितहुँ। दरोगाक बेटाकेँ हीरो होन्डा आ यामहा पर उड़ैत देखि पबितहुँ। अपन मायाजालक हम कतेक बखान करू। आर तँ आर जँ मुरखबहो पर हम ढ़रि जाइत छिऐक तँ ओकरा स्वास्थ्य विभागक चपरासी अथवा नगरपालिकाक टैक्स कलेक्टर बना कऽ चमका दैत छिऐक।

एकटा बात ईहो जानि लियऽ जे जँ हमरा शरणमे जिलाक मालिक जिलाधीशो नहि औताह तँ भगवानो हुनका एतेक साधन नहि देथिन जतेक ओ एखन उपयोग करैत छथि। अपना लेल अलग कार, मेमसाहेब लेल अलग मारूति, तँ नेना सभ लेल अलग व्यवस्था। जँ सच पुछू तँ हमर सहयोग हुनका लोकनिकें नहि भेटनि तँ ओ लोकनि गाड़ीक पेट्रोलक खर्चो नहि जुटा पौताह, नौटाक तीमन तरकारी, मौज-मस्ती आ ऐशो-आरामक वस्तुजातकें के पूछय! कतेक लोकक कथा कहू। सभ हमर सहयोग लेबा लेल आकुल-व्याकुल अछि। विरले केओ अछि जे हमर आवाहन नहि करैत अछि।

जनैत छी, जे हमरा मोनसँ चाहैत अछि, सभकें हम मदति करैत छिऐक, जे भगवानो ने दैत छथिन सेहो हम दैत छिऐक। मुदा हम ओकरे संग दैत छिऐक जकर स्वभावक मिलान हमर स्वभावसँ होइत छैक अर्थात जे हमरा गरियबैत अछि, जे हमरा दुत्कारैत अछि, जे हमरा धिक्कारैत अछि आ स्वयं सेहो इज्जतिसँ रहबाक लेल जीवन भरि लात-जूता खाइत, जीवन भरि दनदनाइत रहबाक संकल्प लैत अछि।

आब अहाँ कहब जे हम अपन अजस्र गुणक बखान अहाँक सम्मुख कऽ गेलहुँ मुदा अपन परिचय नहि देलहुँ। तँ सुनू-हम छी झुट्ठाक तारणहार, बैमानक खेबनहार, लोभी-लालचीक आधार, पापी-पाखंडीक पालनहार, चोर, डकैत बलात्कारी, दुराचारीक दिलबहार, समाजक कोंढ़मे बैसल सफेदपोशक भतार आ हमर नाम अछि-भ्रष्टाचार। आऊ, हमर स्वरमे स्वर मिलाउ, अपनो बढ़ू आ हमरो बढ़ाऊ।



जँ हम जनितहुँ

बिनु पढ़ल लिखल लोक आपसमे कटाउझ करैत अछि तँ बुझबामे अबैत अछि। मछट्टा पर हो-हल्ला होइत अछि तँ सेहो बुझबामे अबैत अछि। धीया-पूताकें लड़ैत देखैत छिऐक तँ होइत अछि जे अज्ञानी अछि। गुण्डा-बदमाशकें हल्ला-गुल्ला, मारि-पीट करैत देखैत छिऐक तँ ई होइत अछि जे जँ बुद्धि रहितैक तँ एना नहि करितय। मुदा पढ़ल-लिखल साहित्यकार, ओकिल, नेता-अभिनेता, डॉक्टर, इंजीनियर, अधिकारी-पदाधिकारी आदि बुद्धिजीवीकें जखन आपसमे कटाउझ करैत, तू-तू, मे-मे करैत देखैत छिऐक तँ हठात् कुकुरक हेंज मोन पड़ि जाइत अछि।

आब अहाँ कहब जे मनुक्खक बीचमे कुकुर सन निकृष्ट जीव कतयसँ टपकि गेल। तँ, एकर सोझ उत्तर ई अछि जे कुकुर जतवे काल लड़ैत अछि ततबे काल लड़ब मोन रखैत अछि आ बादमे लड़ब छोड़ि एक्केठाम उठैत-बैसैत अछि। पेट भरि जाइत छैक तँ खाइत नहि अछि, बेसी खा लैत अछि तँ दूभि खा कऽ बोकरि कऽ चित्त शान्त कऽ लैत अछि। एकटा खास मासमे यौन-क्रिया दिस उन्मुख होइत अछि। जकर अन्न खाइत अछि तकरा स्वामीवत् मानैत अछि, परिचित पर अनेरो आक्रमण नहि करैत छैक आदि-आदि।

मुदा मनुक्ख.... बाप रे! आ ताहूमे बुद्धिजीवी! जुनि पूछू, सभक नाक काटि लेलक अछि एहि कोटिक जीव। जहियासँ एहि बुद्धिजीवी जीवक महत्व आंकल जाय लागल अछि प्रायः तहियेसँ दिन दुन्ना राति चौगुन्ना चोरि, डकैती, बइमानी, भ्रष्टाचार, बलात्कार, व्यभिचार, अनाचारमे वृद्धि भेल अछि। आ आब तँ ई बुद्धिजीवी वर्ग चारिम खंभा बनिकऽ सभ हलकामे 'रंभा हो, रंभा हो' क ताल पर नृत्य करैत 'तहलका' मचा रहल अछि। सत्य पूछी तँ ई जीव आब सभ ठाम एहन स्थिति बना देलक अछि जे प्रशासन पर लालू-मुलायम चढ़ैत अछि, अंगारू-बंगारू देशकें बेचैत अछि आ अपने ई सभ जेटली, सोनिया, ममता, जयललिताक आंचर तर बैसि देश-समाजकें दुहैत अछि आ राबडी-मलाइ खा कऽ महाजन जकाँ मठोमाठ भेल बैसल रहैत अछि।

ई बात नहि जे बुद्धिजीवीक ई प्रजाति प्रशासने टामे पनपल अछि। पत्रकारितामे, अभियांत्रिकी, ओकालति, साहित्यलेखन आ कि राजनीति, सभमे ई जीन पनपि कऽ आब जोआ रहल अछि। ओना आन क्षेत्रक एहि मोसिजीवी बुद्धिजीवीक खेरहा तँ सुनितहि टा छियनि आँखिसँ देखबाक अथवा भजारबाक मौका नहि भेटल अछि मुदा मैथिली साहित्य लेखनक क्षेत्रमे जे लोकनि छथि तनिकासँ अवस्से पाला पड़ल

अछि। हुनका लोकनिकें देखबाक, चिन्हबाक आ भजारबाक अवसरो भेटल अछि। अपनो होइत छल जे हमहूँ बुद्धिजीवी छी मुदा हुनका लोकनिक शरणमे गेलापर जे गति भेल से हमहीं जनैत छी। सौतिया डाहोसँ बेसी एक दोसराकेँ देखबाक प्रवृति, अपन रचनाकेँ मीठ, अनकर रचनाकेँ तीत कहबाक रीति आ गोंधियावाद, संबंधवाद, गुटवाद पर साहित्यकेँ गीजबा-मथबाक जे नीति चलल अछि से साहित्यक संग-संग सामाजकेँ सेहो पताले दिस लऽ जा रहल अछि। जँ हम जनितहुँ जे बुद्धिजीवी सभक एहने किरदानी होइत छैक, मीठ-मीठ बाजिकऽ समाजमे मात्र विषे टा घोरैत अछि, समाजक हित नहि सोचि अपने टा ले सोचैत अछि, बुद्धिजीवीक तगमा लगाकऽ मुखों सँ निकृष्ट आचरण करैत अछि तँ एहि कोटिमे पैसबाक लौल नहि करितहुँ। अशिक्षित, असभ्य, मूढ़ कहायब पसिन्न करितहुँ मुदा बुद्धिजीवीक हेंजमे रहबाक सुख नहि पोसितहुँ।

आब मैथिलीक जे कारबार आ व्यापार चलैत अछि ताहिमे आ मिथिला अथवा मिथिलांचलक उद्धार करबाक नाम पर जे सामान्य लोकक मन-मस्तिष्क पर एहि कोटिक बुद्धिजीवी द्वारा बलात्कार होइत अछि से प्रणम्य अछि। नाम कमयबाक लोभ सभकेँ रहैत छैक मुदा श्रम करबाक पलखति ककरो नहि। जे करैए से कात भऽ जाइए आ जे किछु नहि करैए से मठोमाठ भऽ जाइए। केओ पाइ खर्च कऽ अपन इतिहास बना लैए तँ केओ लंठइक बलें अपन पूजा करबा लैए। आ पत्रकार वर्ग तँ एक चुरू दारू, भरि पेट अन्न आ कि सय-दू सय टाका पर एहन-एहन काजक प्रचार करबामे अपेस्यांत भऽ जाइए। जिनका हाथमे नीक बेजाय बँचबाक हथियार छनि से मुँह देखि मुङबा परसि रहल छथि। कीर्तिमान बनयबाक नाम पर एहन साहित्यजीवी-बुद्धिजीवी कूड़ा-कर्कट लीखि-लीखि कऽ नीक-नीक कागत गंदा कऽ रहल छथि।

आइ-काल्हि मैथिलीमे मारते रास सम्पादक, लेखक, समीक्षक, कथाकार, कवि उगि गेलाह अछि। ई लोकनि समाजकेँ नव दिशा देबा लेल कलमकेँ तरूआरि जकाँ भाँजि रहल छथि जाहिसँ अनेक निर्दोषो लोक आहत भऽ रहल छथि मुदा हुनका लेल धन सन। जुआनीक जोशमे, 30-35 अवस्थामे, परिपक्व, स्थापित, साहित्यकारसँ ढाही लऽ रहल छथि मुदा सम्पादकीयक शीर्षक देबाक अवगति नहि छनि। सम्पादकक स्थान पर अपन असली नाम प्रकाशित करबाक साहस नहि छनि। जेँ ई सभ बुद्धिजीवी छथि तेँ एहन किरदानी। जँ मूढ़ रहितथि तँ निश्चय एना नहि करितथि। अपन पत्रिकाकेँ सर्वश्रेष्ठ आ दोसरक पत्रिकाकेँ निघेंस नहि कहितथि। एहन बुद्धिजीवी केँ के सिखौतनि जे सम्मान पाबऽ लेल सम्मान करय पड़ैत छैक। प्रचार-प्रसार आ बतकुट्टनिसँ प्रतिभाक विकास नहि होइत छैक, विकास होइत छैक निरंतर काज कयलासँ, कीर्तिमान बनैत छैक निस्सन आ उत्कृष्ट काज कयलासँ।

आ समीक्षक लोकनि तँ सहजहि विषय-वस्तुक प्रस्तुति, वर्तमान समयमे ओकर प्रासंगिकता, लेखन शैली, आन भाषासँ ओकर तुलनात्मक विवरण नहि दऽ 'मूर्खक लाठी माझ कपार' सदृश लेखककेँ नीक बेजायक प्रमाण-पत्र देबाक काज कऽ रहलाह अछि। आ से एहि कारणे जे एना कयलासँ लेखक समुदाय हुनक दरबारमे आबय लेल विवश होथु। एहि कोटिक बुद्धिजीवीक एहन आचरणसँ लेखक-कवि कम तैयार भऽ रहल छथि भांटक संख्यामे अप्रत्याशित वृद्धि भऽ रहल अछि। आ मैथिलीक अधिकांश समीक्षक भांटक चर्च बेसी कऽ रहल छथि, हुनका बड़का-बड़का तगमा देबाक ओकालति कऽ रहल छथि। खासकऽ एमहर जे समीक्षा प्रथा प्रारंभ भेल अछि ताहिमे दूटा बात पर मुख्य रूपेँ ध्यान देल जाइछ। पहिल ई जे जे बात उठाओल जाइछ सम्पूर्ण मैथिली साहित्यक मुदा लिखल जाइछ ओतबे जतबा लक्ष्य निर्धारित होइछ। अर्थात जकर प्रचार-प्रसार करबाक रहैछ आ जकर ख़िधांस कऽ धसयबाक उद्देश्य रहैछ। बुद्धिजीवीक एहन आचरणसँ मारल जाइछ ओहन लेखक जे तटस्थ रहि साहित्य-सृजन मे लागल रहैछ, मुदा एहि कोटिक लेखकक कतहु चर्चो नहि होइछ।

बुद्धिजीवी स्वभावक मायाजालसँ इतिहासकार लोकनि सेहो ओतबे प्रभावित छथि। हिनका लोकनिकेँ एतेक पलखति कहाँ छनि जे सम्यक अध्ययन कऽ इतिहासक पन्नाकेँ सुशोभित करताह। समीक्षक द्वारा पाड़ल चोतकेँ उनटि-पनटि कऽ इतिहास बनयबामे हिनका सभकेँ कनेको लाज नहि होइत छनि। मानव मलकेँ गोबर बूझि चिक्कन-चुनमुन कऽ गोइठा रूपी इतिहास गढ़ि लैत छथि। एतेक महामहोपाध्याय, डाक्टर, प्रोफेसर, पंडितक अछैत मैथिलीक मानक इतिहास एही कारणे तैयार नहि भऽ सकल अछि। एखन धरि बुद्धिजीवीक अमार लागल अछि मुदा बुद्धिक प्रयोग नहि भऽ रहल अछि।

अधिकांश साहित्यकार लोकनि समाजकेँ नव दिशा देखयबाक आ कि समाजमे व्याप्त कुरीतिकेँ समाप्त करबाक आह्वान अपन रचना द्वारा नहि करताह। केओ जाति विशेषक गामपर ध्यान केन्द्रित कऽ ओहि जाति पर प्रहार करैत छथि, केओ मार्क्सवादक नारा बुलंद करैत छथि, केओ अपन अग्रज पीढ़ी पर प्रहार करैत छथि तँ केओ नारीक सुकोमल अंग-संग खेलबाक दृश्य देखाकऽ तृप्त होइत छथि। अपना रचना संग न्याय करबाक अवसर किनको नहि छनि मुदा एकटा बक्खो केँ देखि जेना कुकुरक हेंज घेरिकऽ ओकरा नोचबा-भंभोड़बाक चेष्टा करैत अछि तहिना तथाकथित साहित्यकारक कैकटा दल अछि जकर काज लिखबासँ बेसी नोचब भभोड़ब भऽ गेल छनि। कैकटा साहित्यकार तँ दादागिरीक रूपमे आबिकऽ मैथिलीक भंडारमे साहित्य नहि देबऽ चाहैत छथि अपितु अपन जमींदारीक विरुदावलिक रूपमे ओकरा आख्यायित कऽ रहल छथि।

साहित्यकारक मध्य जे एकटा खेल चलि रहल अछि से सभसँ रोचक अछि। एकटा साहित्यकार लिखताह-फल्लासँ समर्थ एखन दोसर कोनो समीक्षक नहि छथि। फेर ओ फल्लां समीक्षक ओहि साहित्यकारक मादे लिखताह-एखन जतेक गोटे मैथिलीमे लीखि रहल छथि ताहिमे ओ सर्वश्रेष्ठ छथि। मुदा जँ उक्त दुनू गोटेमेसँ किनको पर केओ तेसर विरोधी विचार प्रकट करत तँ फेर ओ दुनू एक्के संग चिल्ल-पों करैत ओकरा दबयबाक प्रयास करताह। माने साहित्यलेखन नहि भऽ लेखन-सृजन सेहो दादागिरीक अस्त्र भऽ गेल । जे जेना चाहय भाँजि लिअय।

तथाकथित किछु साहित्यकार तँ आलराउन्डरे छथि जनिका सहजे सभ किछु अबैत छनि,नहि अबैत छैक तँ पाठकके। हुनका नजरिमे पाठक बुड़ि अछि जकरा हुनक रचना बुझबाक अवगति नहि छैक। एहन साहित्यकार जें कि बुद्धिक बधि या कराकऽ एहि क्षेत्रमे अबैत छथि, हाकिम-हुक्कामक पदकें सुशोभित करैत छथि तें हिनका संग सेहो एकटा हेंज रहैत छनि जे हिनक स्वरमे स्वर मिलाकऽ भुकैत अछि, साहित्यक मैदानमे छड़पान दैत अछि, साहित्यकें गिजैत अछि, मथैत अछि, कतहु खाइत अछि, कतहु फिरैत अछि; ककरो नोचैत अछि, ककरो भम्होरैत अछि; पटनासँ दिल्ली, दरभंगासँ पटना आ सहरसासँ कलकत्ता धरि बोमिआइत-बोकरैत साहित्यिक गतिविधिकें दूषित करैत चलैत छथि।

एहन साहित्यकार जें कि बुद्धिजीवी छथि तँ सभ मौसममे हरिआयले रहैत छथि। हिनका लेल सभ दिन वसंते रहैत छनि आ जें कि ई रिमोट कन्ट्रोल द्वारा चालित रोबोट बनल छथि, तें ई ने तँ थकैत छथि, ने अघाइत छथि आ ने हिनक जोशमे कमी अबैत छनि अपितु आयातित बुद्धिक बलें बुद्धिजीवीक रूपमे ख्यात भेलोपर अपनाकें गौरवान्वित बुझैत छथि।

सत्ये कहैत छी- बुद्धिजीवी लोकनिक ई सभ किरदानी देखला पर अफसोस होइत अछि जे किएक एहि हेंजमें शामिल भेलहुँ, किएक ने कुकुरक कोटिमे रहलहुँ मौसमे अयला पर यौन-क्रियाक उन्माद चढ़ैत, मनुक्ख जकाँ सभ मौसममे बलात्कार करबाक इच्छा नहि होइत। परिचित-अपरिचितकें चिन्हिये कऽ आक्रमण करबाक स्वभाव रहैत। नोन खयलापर सरियत देबाक प्रवृतिक अनुगामी होइतहुँ। पेट भरि गेलापर पर शान्त भऽ जइतहुँ। आपसमे लड़ितहुँ नहि। जँ कदाचित बेसी खोआ जाइत तँ दूभि-पात खाकऽ बेसी खयबाक प्रायश्चितक रूपमे बोकरि कऽ मोन शान्त कऽ लितहुँ। बुद्धि कने कमे रहितय तँ बधिया नहि कराबय पड़ैत आ कने-मने लड़ि कऽ शीघ्रे आपसमे मेल करबाक प्रवृति रहैत। सत्ते, जँ हम जनितहुँ जे बुद्धिक बधिया कराकऽ बुद्धिजीवी बनलाक बाद ई गति होयत तँ कथमपि बुद्धिजीवीक हेंजमे शामिल होयबाक लौल नहि करितहुँ, नहि करितहुँ, किन्नहु नहि करितहुँ।



प्लेटोक सपना, भारत आ कौमार्य-राजनीति

एम.ए. मे पढ़बाकाल प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटोक विश्वविख्यात पोथी 'रिपब्लिक' पढ़ने रही। ओहि पोथीमे ओ आदर्श राज्यक परिकल्पना करबाक क्रममे राज्यक बागडोर 'फिलास्फर किंग'क हाथमे सोंपबाक बात कहने छथि। फिलास्फर किंग केहन होअय ताहि मादे हुनक मान्यता छलनि जे शासन आ सार्वजनिक जीवनमे आबयवला व्यक्तिकें अविवाहित रहब पहिल शर्त थिक। हुनक ई सोच एहि कारणे रहनि जे अविवाहित रहनिहार व्यक्ति मोह-माया सँ दूर रहत आ सदिखन सार्वजनिक हितक ध्यान राखत।

तहिया ई बात बड़ नीक लागल छल, मुदा आब जे स्थिति आ अविवाहित व्यक्तिक, जे राजनीतिमे छथि, आचरण देखैत छियनि तँ प्लेटोक अवधारणा खंडित होइत लगैत अछि। प्लेटो इतिहास रचि गेलाह मुदा हुनका देशमे अविवाहित 'फिलास्फर किंग' नहि भऽ सकलथिन। मुदा ई कहब जे हुनक सोच गलत छलनि से मिथ्या होयत। भारतक राजनीतिमे पैसल अनेक नेताकें देखि आइ हुनक आत्मा जुड़ाइत होयतनि। कारण हुनक 'फिलास्फर किंग'क छवि लऽ कऽ भारतमे आइ कैकटा नेता सत्ताकें अपना चरणमे रखने छथि आ विवाह नहि कयने छथि, तें समाजमे ओ अपनाकें मोह-मायासँ दूर बतबैत छथि। मुदा फिलास्फर किंग कें ज्ञानी होयब, समाजक हितचिन्तक होयब सेहो अनिवार्य शर्त छैक ताहिसँ कोनो छुइत नहि। आखिर किएक सोचताह ओ नीक बेजायक विषयमे जखन कि हुनका अपना बहु-बेटी नहि छनि, घर-परिवार नहि छनि।

आइ भारतीय राजनीतिमे प्लेटोक अवधारणाकें सत्य प्रमाणित करबा लेल कुमार आ कुमारि नेतालोकनि अपन-अपन बाँहि फरकबैत-फरकबैत देशक सर्वोच्च शिखरक गद्दीसँ लऽ कऽ राज्य सभक गद्दी पर पल्थी मारि कऽ बैसल छथि। हिनका लोकनिकें घर-परिवार नहि छनि, बहु-बेटी, सायं-बेटा नहि छनि मुदा ई लोकनि एकटा सामान्य गृहस्थोक नाक-कानि काटि कऽ सत्ता पर बैसि चानी काटि रहल छथि।

भारत सन देश जतय, जनक सन राजा गृहस्थाश्रममे रहि आदर्श प्रजापति कहयलाह ताहिठाम आइ भारतीय शासनक बागडोर श्री अटल बिहारी वाजपेयीक हाथमे छनि। ईहो प्लेटोक सपनाक कुमारे छथि, शासन कऽ रहल छथि मुदा ब्रह्मचर्यक पालन नहि कऽ सकलाह से अपने स्वीकार करैत छथि। प्रायः तें पुत्री, जमाय सभ भगवानक कृपासँ छनि। विवाह करी की नहि करी से सोचैत-सोचैत

80क वयस पर पहुँचि गेलाह। कुमार रहि कऽ सभ सुख मौज कयलनि आ आब सत्ताक सुख पाबि कऽ जनता लेल 'हँ', 'नहि' कऽ कऽ राजकाज चला रहल छथि। देशक जवान सीमापर कटि-मरि रहल अछि, सम्पूर्ण विश्वक नजरि भारतक सीमा पर किछु भऽ जयबाक कारणे लागल अछि मुदा भारतक आजीवन कुमार रहबाक व्रत धारण करयवला प्रधानमंत्री मनालीमे सपरिवार छुट्टी मनबय चल गेलाह। प्लेटोक आत्मा स्वर्गोमे गदगद भऽ गेल होयतनि अपन स्वप्नक 'फिलास्फर किंग'क किरदानी पर।

एक समय छल जखन भारतक ई कुमार प्रधानमंत्री सत्तामे रस-संचार करबा लेल प्लेटोक सभ सिद्धान्तकेँ तिलांजलि दऽ मात्र अविवाहित रहबाक संकल्पक पालन करबा लेल तीन-तीन टा कुमारि कान्या-सुश्री जय ललिता, सुश्री ममता आ सुश्री मायावती-मायामे लेबझा कऽ भारतकेँ बिसरि गेलाह छलाह। मुदा धन्य कही काशीरामजीकेँ जे मायावतीकेँ पुनः अपन मायामे लपेटि काशी आपस लऽ गेलाह। ममता बंगालक दंगलमे पस्त भऽ कोलकातामे ता-ता थैया करय लेल विवश भऽ गेलीह आ जयललिता घोटालाक फीतामे फँसि जयबाक कारणे हुनका पांजसँ बाहर भऽ गेलीह। मुदा प्लेटोक ई शिष्य हारि मानयवला थोड़े छथि- फेर पटा कऽ लऽ अयलाह अछि सुश्री मायावतीकेँ आ उत्तर प्रदेशक पटरानी बना कऽ निचैन भऽ गेलाह अछि।

वाजपेयीजी सन कलामी कुमारक शिष्य श्री नरेन्द्र मोदी कनेके दिनमे गुजरातमे जे हलचल मचा देलनि ताहिसँ स्पष्ट बुझाइत अछि जे दाढ़ी केश पकने की होयतनि एखन धरि ओ चिरकुमारे छथि, भने ब्रह्मचर्यक पालन नहि कयने छथि। गुजरात जरि गेल, ओकर धाहसँ सम्पूर्ण देश पाकि गेल मुदा वाजपेयीजी सन अक्षय कौमार्य व्रतक पालन कयनिहारँक छत्रछायामे ओ सुरक्षिते रहलाह। कुशोक कलेप नहि भेलनि हुनका। भने गुजरातक हजारो लोक मारल गेल, सैकड़ो परिवार अनाथ भऽ गेल, कैकटा युवतीक इज्जति लूटि लेल गेल। मोदी जी केँ की कोनो बहु-बेटी छनि जे क्यो ओकर इज्जति लूटि लेतनि। एहि लेल तँ स्वयं तैयार भऽ कऽ शासन करय आयल छथि ओ। हुनका की डर होयतनि, डेरयबाक चाहिऐक गुजरातक जनताकेँ जकर नेता एखनो कुमारे छैक, ककरो वरण कऽ सकैत छैक।

सुश्री जयललिताक कौमार्यक आगाँ तमिलनाडुक राजनीति आइ 20 वर्षसँ नाचि रहल छैक। की मजाल छैक जे किछुओ दिन ओ ककरो चैनसँ बैसय देथिन। किछुए दिन अपन पुत्र स्टालीनक सहयोगसँ ओहिठामक महाबली करुणानिधि जयललिताकेँ खराप नजरिसँ देखलथिन की हुनका सत्ताच्यूत तँ होमहि पडलनि

जे मुँह-हाथ झाड़ि कऽ बीच सड़क पर पुलिस हुनका ओंघरा देने छलनि।

एकटा आर कुमार राज्यपाल सुन्दर सिंह भंडारी जखन बिहार आयल रहथि तँ अपन कौमार्यक तपसँ लालू-राबड़ीक शान्त शासनकेँ बेचैन कऽ देने रहथि। रोज दुनूमे भिड़न्त भऽ जाइनि आ परिणाम भोगय बिहारक जनता। ई तँ राबड़ी छलीह जे अपन बाल-बच्चाकेँ डेबैत-डेबैत कुमार लोक सभकेँ डेबनाइ सीख गेल छलीह, तेँ हुनका शीघ्रे परतारि कऽ गुजरात पठा देलथिन आ चैनक सांस लेलनि।

आ आब स्थिति ई आबि गेल अछि जे भारतक प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी जीकेँ गृहस्थ जीवन व्यतीत कयनिहार लोकेँ ने सोहाइत छनि। बुझना जाइत अछि जे प्लेटोक आत्मा हुनका पर सवार भऽ गेल छनि प्रायः। साइत तेँ जखन देशक सर्वोच्च पद राष्ट्रपतिक चुनावक समय आयल तँ हुनका केयो जँचबे ने कयलनि। वर्तमान राष्ट्रपति नारायणन, उपराष्ट्रपति कृष्णकान्त, कर्ण सिंह, पी.सी. एलेक्जेंडर आदि-आदि कतेको उमेदवारक नाम हुनका सोझां आयल मुदा ओ टस सँ मस नहि भेलाह। जखन ई भऽ गेल जे राजग आ कांग्रेसमे एहि पदक दावेदारीक दंगल होयबे करत तँ ओ सभकेँ चकित करैत प्लेटोक स्वप्नक राजकुमारक रूपमे कौमार्य व्रत धारण कयनिहार विश्वविख्यात वैज्ञानिक भारत रत्न अबुल कलाम, जे सभ दिन विज्ञान जगतमे अपन कमाल देखबैत रहलाह अछि तनिका राष्ट्रपति पदक उमेदवार बना सभ दलकेँ चित्त कऽ देलनि। जेँ कि अबुल कलाम विद्वान छथि, देशभक्त छथि, अल्पसंख्यक वर्गक छथि, भारतक रत्न छथि आ सभसँ बढ़ि कऽ ई बात जे ओ एखन धरि कुमारे छथि, से जानि सभ दल सकदम्म भऽ गेल। राजगसँ अरारि लेनिहार कांग्रेस तुरंते एहि कुमार प्रत्याशीकेँ वरण करबाक घोषणा कयलक। भाजपा केँ 'भारत जलाओ पार्टी' कहनिहार राजदक राजा आ कांग्रेसक लगजोड़ी नेता लालू प्रसादजी सेहो हुनका वरण कऽ लेलनि आ ई 'कौमार्य-राजनीति' सफल भऽ गेल।

भारत रत्न 'मिसाइल मैन' चिरकुमार अबुल कलाम साहेब आब जखन कि राष्ट्रपति बनि ये जकाँ गेलाह अछि तखन प्लेटोक आत्मा पूर्ण संतुष्ट भऽ निचैन भऽ गेल होयतनि जे चलू नहि अपना देशमे भारतेमे सही हुनकर 'फिलास्फर किंग'क सपना तँ साकार भेलनि। आब ई अबुल कलामजीक रूचि पर निर्भर करैछ जे ओ भारत सन विकासशील देशक राजकाज देखथि कि गोविन्दाचार्य जी जकाँ सत्ता सुख पबिते उमा भारती सन साध्वीक आंचर तरमे सुख तकबाक व्योंत धरबैत छथि। ओना कलाम साहेबक पैघ भाइ हिनक राष्ट्रपति बनबासँ पूर्वे

लोककेँ ई जना देलथिन अछि जे श्री कलाम कौमार्य व्रत धारण करबा लेल कुमारे नहि रहि गेलाह अपितु छुट्टी नहि भेटबाक कारणे हिनक सगाई नहि भऽ सकल छंलनि। बादमे जखन सगाई करबा लेल अयलाह तँ ओ 'दिलवाली दुल्हनियाँ' अनकर भऽ चुकलि छलि।

जे-से। केन्द्र सरकार आब पूर्ण रूपें कुमार लोकनिक गिरफ्तमे आबि गेल अछि। भारतक सभसँ पैघ राज्य उत्तर प्रदेश 'कुमारि' वाला सुश्री मायावतीक हाथमे अछि। तमिलनाडु सन संवेदी राज्य चिरकुमारि, घोटाला विशेषज्ञ, जयललिताक पांजमे अछि, गुजरात सन औद्योगिक राज्य चिरकुमार, दंगा विशेषज्ञ, नरेन्द्र मोदीक हाथमे सुरक्षित अछि। प्लेटोक आत्मा प्रसन्न छनि कुमारि-कुमारक चलती भेलासँ आ प्रायः एही कारणें एमहर भारतमे युवक-युवती दुनूक अपहरणमे बेतहाशा वृद्धि भऽ रहल अछि। गृहस्थ सभ पस्त छथि, चिरकुमार लोकनि मस्त छथि। गृहस्थ लोकनि सुस्त छथि, कुमार-कुमारि सभ 70-80क धक लगलाक बादो चुश्त छथि। केयो जाँघ सोझ करय लेल ठेहुन बदलैत छथि तँ क्यो 15 हाथक साड़ी पहिरि एखनो नवयौवनाक नाक कटने फिरैत छथि।

धन्य छथि प्लेटो सन दार्शनिक जनिकर मन कुमारे नेतामे बसलनि आ धन्य अछि भारतीय राजनीति जकर तन कुमार नेता सभसँ जुरा रहलैक अछि।

प्लेटोक सपना तँ पूरा भऽ गेलनि मुदा एहि चिरकुमार-चिरकुमारि नेतालोकनिक जीह आ... वशमे नहि रहबाक कारणे भारतक आदर्श रामराज्यक सपना एखनं धरि पूरा नहि भऽ सकलैक अछि। देखी, प्लेटोक सपनाक राजकुमार अबुल कलाम साहेब अपन कमाल देखबैत 'फिलासफर किंग' बनि भारतक सपना पूरा कऽ पबैत छथि की ईहो 'बोकबा रहल कुमारे'क कहबीकेँ चरितार्थ करैत छथि। ●

शरदिन्दु कुमार चौधरी

पिता : स्व० सुधांशु 'शेखर' चौधरी

जन्म : 7.10.1956, मिश्रटोला,
दरभंगा, बिहार

शिक्षा : एम.ए. (राजनीतिशास्त्र),
पटना विश्वविद्यालय, पटना

व्यवसाय : पत्रकारिता
1981–84 मिथिला मिहिर साप्ताहिक
1984–86 मिथिला मिहिर दैनिक
1987–89 मिथिला मिहिर मासिक
आर्यावर्त, हिन्दी दैनिक, पटनामे सम्प्रति 1995 सँ फीचर प्रभारीक रूपमे कार्यरत

लेखन : हिन्दी एवं मैथिलीमे दू सयसँ बेसी
रचना प्रकाशित,
20सँ ऊपर स्मरिकाक संपादन
सम्प्रति 'समय–साल' मैथिली द्वैमासिक पत्रिकाक संपादक
पोथीक रूपमे पहिल संग्रह–जँ हम जनितहुँ